साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ७: २०१०–११

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:

शिकोहाबाद: शशिकांत पाण्डेय, अभिषेक श्रीवास्तव

शब्दम् , हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 205141. फोन: (05676)234501/503

ई-मेल: hindlamps@sify.com

मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई फोन - 022-22826187

www.shabdamhindi.com

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ७: २०१०-११

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
श्री उदय प्रताप सिंह
श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज
श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त
श्री उमाशंकर शर्मा
डॉ.ओमप्रकाश सिंह
डॉ. ए.के. आहूजा
डॉ. रजनी यादव
डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया
डॉ. महेश आलोक
श्री मंजरउल वासै
श्री मुकेश मणिकांचन
श्री राजकुमार शर्मा

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

समन्वय

शशिकांत पाण्डेय • अभिषेक श्रीवास्तव
अभय दिक्षित • आशा जोशी • श्री देवराज गुप्ता

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 3
रंगीलो राजस्थान 4
वसन्त के बहाने निराला की याद 6
सूफी कव्वाली 9
कान्हा के हाथ कनक पिचकारी 11
भगवान बुद्ध के दर्शन के आलोक में प्रबन्धन 13
ग्रामीण कवि सम्मेलन 14
प्रेमचन्द की जयन्ती पर नाट्य मंचन 20
छऊ नृत्य 22
शिक्षक दिवस 23
स्वर सुधा 25
नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी 28
प्रश्न मंच 31
पत्रकार वार्ता 33
जनपदीय चिंतन एवं सुझाव गोष्ठी 35
स्थापना दिवस 36
कृष्ण – वर्धा 40
न्यूज़ीलैंड में टैगोर का जन्मदिन 42
कबिरा खड़ा बाज़ार में 44
सम्मान समाचार 46
अतीत के पन्नोंसे 47
अन्यान्य 49

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

अध्यक्षीय निवेदन

'कलाकार जितना ही सम्पूर्ण होगा उतना ही उसके भीतर भोगने वाले प्राणी और रचने वाली मनीषा का अलगाव स्पष्ट होगा।'

टी. एस. इलियट के इस कथन से अपनी बात शुरू करते हुए 'शब्दम्' अपनी पीठ थपथपा सकता है कि आठवें वर्ष में प्रवेश करते हुए हमने साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में उन्हीं कलाकारों, साहित्यकारों को सम्मानित किया है अथवा उनका सर्जनात्मक सहयोग लिया है, जो कलाकार की इस कसौटी पर लगभग खरे उतरते हैं।

इन सात वर्षों में 'शब्दम्' ने स्वयं को आम आदमी और उसकी लोकधर्मी चेतना से न केवल जोड़ा है, बल्कि उससे गहरा रचनात्मक संवाद भी स्थापित किया है। 'शब्दम्' का यह अंक इसी 'संवाद' का समन्वयवादी दस्तावेज है।

इस अंक में वर्ष भर की गतिविधियों से आप पाएंगे कि परिलक्षण के प्रमुख बिन्दुओं को 'शब्दम्' ने संपूर्णता में प्राप्त भले न किया हो, उसे पहचान अवश्य लिया है।

पहचान की इस प्रक्रिया में हमने बोलियों से, लोकरूपों से, हमारी विपुल लोक संपदा से हिन्दी का सर्जनात्मक सम्बन्ध, सोच और संवेदना – दोनों स्तरों पर निर्धारित किया है। हमने प्रदर्शनकारी कलाओं– विशेषकर रंगमंच और रूपंकर कलाओं जैसे छऊ नृत्य तथा शास्त्रीय संगीत के माध्यम से संस्कृति और प्रकृति के उस अक्षय ऊर्जा स्रोत को पकड़ने की पहल की है जिसका अभाव हिन्दी के जातीय अस्तित्व को ही भयानक संकट में डाल देता है।

शब्द, सत्य और सौन्दर्य– तीनों को एकरूप, तीनों को एक दूसरे की शर्तों पर चरितार्थ करते हुए 'शब्दम्' ने इन सात वर्षों में साहित्य, संस्कृति और कला को जनभावनाओं का मुखर पक्षधर बनाया है। इस पक्षधरता के साथ– साथ नैतिकता, मर्यादा, पवित्रता, कर्मयोग और सत्य जैसे एक विशिष्ट कोटि के भाव या प्रत्यय को बार– बार प्रकट करते हुए हिन्दी के विस्तृत फलक पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में हम सफल हुए हैं– यह संतोष हमें ठहरने की अनुमति नहीं देता, बल्कि आगे बढ़कर 'मानवीय स्वप्न और सरोकारों' को और गहरे स्तर पर पकड़ने की प्रेरणा प्रदान करता है।

अंत में, इस सहयात्रा में शामिल सभी सहयोगियों, सलाहकार मंडल के विद्वत सदस्यों के प्रति आभार प्रदर्शित करना, मेरी दृष्टि में उनके कद को छोटा करना है, क्योंकि वे ही तो 'शब्दम्' के मार्गदर्शक हैं, उसके क्रियाकलापों के अभिन्न सहयोगी हैं, उसकी ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां हैं। हमारी ताकत हैं।

आगे भी आपका हार्दिक सहयोग और विश्वास हमें मिलता रहेगा, इसी अक्षय कामना के साथ नये कलेवर में 'शब्दम्' का यह सातवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

कपिला वात्स्यायन

रंगीलो राजस्थान

- **कार्यक्रम विषयः** रंगीलो राजस्थान
- **दिनांकः** 24 दिसम्बर 2010 • **समयः** सांय 06:30 से 9 बजे
- **स्थानः** गांधी चौक, वर्धा
- **संयोजनः** 'शब्दम्', श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट

लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट तथा शब्दम के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान के बुंदू खान लंगा के समूह ने गांधी चौक में नृत्य–गीत तथा संगीत की सांस्कृतिक प्रस्तुति से दर्शकों के सम्मुख राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव, लोककला के माध्यम से साकार किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ गणेश वंदना से हुआ, बाद में अलगोजा की प्रस्तुति दी। जिसमें एक साथ दो बाँसुरी बजाना लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा । चरी नृत्य, मोर बंद गीत तथा राजस्थानी लोकगीतों ने उपस्थितों का मन मोह लिया। घूमर नृत्य के समय नगर की युवतियां मंच पर आकर कलाकारों के साथ स्वयं प्रेरणा से नृत्य में सहभागी हुई। कार्यक्रम में वाद्यों की जुगलबंदी को लोगों ने बहुत सराहा।

इस अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री शेखर बजाज ने कलाकारों का

स्वागत करते हुए कहा कि जहां लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संस्कारों का स्थान है, वहीं शब्दम् साहित्य, संगीत तथा कला के क्षेत्र में कार्यरत संगठन है। कलाकारों की प्रस्तुति पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि लोक कला जीवित रखने का श्रेय ऐसे कलाकारों को ही जाता है जो कला के प्रति समर्पित जीवन जीते हैं। उनकी हर सांस में लोक कला के प्रति श्रद्धा बसी होती है।

आयोजन में श्री राहुल बजाज, मधुर बजाज, अनंत बजाज, पूजा बजाज आदि बजाज परिवार के प्रमुख सदस्य तथा शहर के असंख्य नागरिक उपस्थित थे। आम लोगों ने इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए प्रति वर्ष ऐसा कार्यक्रम होता रहे यह इच्छा व्यक्त की।

श्री बुंदूखान लंगा

राजस्थान के लंगा समुदाय में सूफी संगीत पीढ़ी – दर–पीढ़ी चल रहा है, कोई भी लंगा एक संगीत–विहीन ज़िन्दगी की कल्पना भी नहीं कर सकता है, राजस्थान की मरुभूमि को इस समुदाय ने अपने संगीत से महकाया है, कई रंगों से भर दिया है।

बुंदूखान साहब उस्ताद अलाउद्दीन खां लंगा तथा उस्ताद रहमत खां लंगा के शागिर्द हैं। 12 वर्ष की उम्र से ही उन्होंने संगीत प्रस्तुति प्रारम्भ कर दी थी। जापान, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड रूस, स्विट्ज़रलैंड, अमरीका, हॉलेंड, फ्रांस, इंग्लैंड आदि देशों में उन्होंने अपने कार्यक्रम दिये हैं। कई पुरस्कारों से उन्हें नवाजा गया है, जिनमें मुख्य हैं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2004, मरूधरा संस्था कोलकाता पुरस्कार–2005 आदि।

उनके लिए सच कहा गया है – ''रेगिस्तान बंजर नहीं है, क्योंकि वहां की मिट्टी में रंग उगते हैं, संगीत वहां का पान–पत्ता है और वहां की आन–बान–शान की झलक बुंदूखान साहब के संगीत में दिखाई देती है''।

वसन्त के बहाने निराला की याद

- **कार्यक्रम विषयः** वसन्त के बहाने निराला की याद
- **दिनांकः** 19 फरवरी 2011 • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कलाकारः** मंजर उल–वासै, मुकेश मणिकान्चन, ओम प्रकाश बेवरिया, सुरेन्द्र सौरभ, कृपा शंकर
- शर्मा, प्रशान्त उपाध्याय, गिरीश जैन, रामदास सैनी, कप्तान सिंह 'संघर्षी', अशोक कुमार, डॉ. ए.एम. खान, रविन्द्र रंजन, विवेक विश्वास, अनिल बेधड़क

वसंत पंचमी। मां वाग्देवी का प्राकट्योत्सव और कविवर रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती। एक ही भावबोध वाले यह दो पर्व साहित्यानुरागियों को हमेशा से भाते और लुभाते रहे हैं। इस उपलक्ष्य में स्थान–स्थान पर होने वाले अनेकानेक समारोहों से भिन्न शब्दम् ने हिन्दलैम्प्स के स्टाफ क्लब में एक विशिष्ट काव्य समारोह का आयोजन किया। मौका बसंत का था लेकिन उसके साथ ही महाकवि की स्मृतियों को भी ताजा किया गया। समारोह इस दृष्टि से विशिष्ट था कि रचनाकारों को सिर्फ बसंत और निराला पर ही रचनाएं प्रस्तुत करने का कहा गया था।

क्षेत्रीय रचनाकारों ने पर्व की इस मर्यादा का बखूबी निर्वाह किया। सलाहकार मंडल के मंजर उल वासै ने बसंत के आकर्षण को वाणी में बांध कर परोसा । उन्होंने निराला के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भी संक्षिप्त व्याख्यान दिया। उनकी महान रचनाएं 'सरोज स्मृति' एवं 'राम की शक्ति पूजा' का विशेष उल्लेख किया गया।

रचनापाठ करते हुए सुरेंद्र सौरभ ने वसंत में विरह के अनुभव को यूं बयां किया: 'विरह के मौन मंदिर

ओमप्रकाश बेवरिया काव्य पाठ करते हुये एवं मंचासीन अन्य स्थानीय कविगण।

मंजर उल–वासै काव्य पाठ करते हुए।

में गीत किसने सुनाया है, विलगता की घड़ी में क्यों भला ऋतुराज आया है'। 'क्यों इतने धीरे आते वसन्त, जड़चेतन को मदमाते वसन्त' कह कर मंजर उल वासै ने रचनाकार के अंतर्मन की अधीरता को रेखांकित किया। व्यंग्यकार प्रशांत उपाध्याय ने अपने भावों को इस तरह शब्द दिये : 'हां ऐसा ही होता है अक्सर जब दिन बासन्ती आते हैं, डाकिये हवा के द्वार द्वार पर प्रेम पत्र दे जाते हैं'। समारोह का संचालन करते हुए मुकेश मणिकान्चन ने अपने नजरिये को शब्द दिये : 'बापू ने दे दिया हमें भारत स्वतंत्र है, लेकिन अभी जंजीर में जकड़ा बसन्त है'। अशोक कुमार ने रचना के माध्यम से कामना की 'ऐसा हो बसन्त, दुखों का हो अन्त'। रवीन्द्र रंजन ने अपनी रचना में कहा : 'भावों के फूल खिले जब मेरी कविता में, उस दिन मेरे गीत बसन्ती गंध लुटाएंगे'। विवेक विश्वास ने ग़ज़ल पढ़ते हुए कहा : 'प्रीत ने ओढ़ी है चुनरी बसन्ती सरसों की, देख कर बुझ गयी है प्यास वर्षों की'।

इस क्रम को जीवन के अनुभव से जोड़ा हास्य कवि अनिल बेधड़क ने। उन्होंने कहा : 'सूखे पत्ते , सूखी डाली – फल विहीन कैसी हरियाली। कलियां सूख गयी डालों पर आंसू फूलों के गालों पर'। निर्दोष 'प्रेमी' ने बासन्ती रंग बिखेरते हुए कहा : 'लाल – हरे –नीले–पीले–वैजन्ती फूल गुलाबी हैं, पाल–पात फूलों का मौसम, जलवे हुए नवाबी हैं'। ओमप्रकाश बेवरिया ने ब्रजभाषा का लालित्य दिखाया : 'फुदकि फुदकि डालन पै चिरई चिल्लाय रही', जैसे बसन्त की बरात चली आय रही'। अध्यक्षता कर रहे कृपाशंकर शर्मा 'शूल' ने निराला को समर्पित भावपूर्ण रचना का पाठ किया : 'जो तन के भी कपड़े पहना दे भिक्षुक था ऐसा दिलवाला'।

चयनित रचनाएं

ओमप्रकाश बेवरिया

विहसौं नव सुमन कहूँ छलियन कल्लोल करैं,
पछवा की चपकिन संग हिय को सुहावत हैं।
ओसनकी तनिक तनिक बूँदन सो अंग भिजै
मोरन के झुण्डन कौ और हूँ लुभावत है।
हर हस्त हरियाली हरे – हरे पेड़न पै,
नई–नई कोपल पै तरुणी तरुणाई हैं।

बिच–बिच है डहर रहयौ अमुआ को बौरजिमै,
ग्वालन से मिलिने को गोपी घिरि आई है।

फुदकि फुदकि डालन पै चिरई चिल्लाइ रहीं,
जैसे वंसत की बरात चली आई है,

सारे खग चूँ चूँ में एक ध्वनि बोलि रहे,
आई है आई अब वसंत ऋतु आई है।

■ ■ ■

गिरीश जैन

आ वसन्त आ वसन्त
आगया वसन्त छा गया वसन्त
फिर बस अन्त वसन्त

विवेक विश्वास

सर्द मौसम की ये शायद रवानी लगती है।
अब तो ठण्डी बयार भी सुहानी लगती है।।
ऐसा लगता है कि मौसम ने ली अँगड़ाई है।
रंग ऑचल में भरके ऋतु वसन्त आई है।
हर एक पे छाई है जैसे जवानी लगती है।।
आम बौरे तो हुआ मस्त ये मन मतवाला।
चारों ही ओर महकने लगी है मधुशाला।
कोयल की कूक भी अपनी कहानी लगती है।।
प्रीत ने ओढ़ी है चुनरी वसंती सरसों की।
देख के बुझ गयी है प्यास जैसे बरसों की।
सूखे मरूथल की ये धरती भी धानी लगती है।।

■ ■ ■

मंजर–उल–वासै

क्यों इतने धीरे आते वसन्त
क्यों अतिशीघ्र तुम जाते वसन्त
मद मधु फैलाओ कण–कण में
पुष्प गुच्छ कहलाते वसन्त
सर्वत्र सुगन्ध फैलाने वसन्त
तुम शिशिर के बदले तेवर हो
तुम रति भाभी के देवर हो
कन्दर्भ सखा कहलाते वसन्त
जड़ चेतन को मदमाते वसन्त

■ ■ ■

रवीन्द्र रंजन

भावों के फूल खिले अब मेरी कविता में
उस दिन मेरे गीत वसन्ती गन्ध लुटायेंगे।
पतझर की रोज बगावत तूफानी
कलियों पर शबनम का दम टूट गया
झर झर गिरते है फूल सिसकियां भरते है
जैसे कोई दुध मुहों आज मेले में छूट गया।
वेदना अपाहिज होकर गीत लिखे
घायल आँसू की भाषा में वो छन्द बनायेंगे।

■ ■ ■

डा. ए.एम. खान

इस तवक्कौ में खुला रखना गिरेबां अपना
जाने कब आन मिले जाने बहारां अपना।
लम्हें लम्हें की रफाक़त थी कमी बजहे निषात
मौसमें हिज्र हुआ अब सरो सामां अपना।
नित नये ख्वाब दिखाता है उजालों के लिये
वो है दुश्मने जां दुश्मने ईमां अपना।
निकहते गुल ही नहीं खाक भी है हमको अज़ीज
अपना सेहरा है चमन अपना खियावां अपना।
ये तो माना कि हुई इश्क रूसवाई बहुत
हो गया नाम ग़ज़ल नुमायां अपना।
इससे बिछड़े हैं तो महसूस हुआ है अफ़जल
हाल इतना तो न था पहले परेशां अपना।

■ ■ ■

अनिल बेधड़क

सूखे पत्ते सूखी डाली, फलविहीन कैसी हरियाली।
कलियां सूखगयी डालों पर, आंसू फूलों के गालों पर।।
फिर भी जश्न मनाता माली, खुशियां भी लगती हैं खाली।
यारों ये कैसा वसंत है, कुछ बोलो ये कैसा वसंत है।
भाई बना भाई का दुश्मन, यह मजहब में कैसी अनबन।
लूटें सुबह शाम होती हैं, पकड़ें सरे आम होती हैं।
है वसंत खुशियों से खाली, अब वसंत की रीति निराली।
यारों ये कैसा वसंत है, कुछ बोलो कैसा वसंत है।

■ ■ ■

अशोक कुमार 'प्रवक्ता'

मैंया अगली साल में ऐसा होय वसन्त
खुशियां तो चहुँ देश दिखे दुःखों का होवे अन्त।।

■ ■ ■

- **कार्यक्रम विषयः** सूफी कव्वाली
- **दिनांकः** 30 मार्च 2011
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके की संयुक्त प्रस्तुति
- **आमंत्रित कलाकारः** कव्वाल हाजी मोहम्मद अहमद खॉ वारसी (वारसी बंधु)

भारत की गंगा जमुनी तहजीब को अपनी कव्वालियों के फन से हाजी मोहम्मद अहमद खान ने तरोताजा किया शब्दम के कला मंच पर। 'मशहूर हर तरह से तेरा नाम हो गया, मौला कहीं रहीम कहीं राम हो गया।' इसी तरह के शेरों को सुन फिरोजाबाद जिले के चुनिंदा श्रोताओं के वाहवाही के स्वर फिजां में तैरते रहे। जिले के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने भी इस समां का भरपूर लुत्फ उठाया।

स्पिक मैके एवं शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दलैम्प्स के संस्कृति भवन में आयोजित सूफी कव्वाली के आयोजन में कव्वाल हाजी मोहम्मद अहमद वारसी के कमाल के तमाम लोग बेहद कायल रहे।

वारसी बंधु ने कार्यक्रम का शुभारम्भ 'नाते पाक' से किया। देश के विख्यात कव्वाल वारसी बंधु ने सूफियानी कव्वाली सुनाकर लोगों को ईश्वर और अल्लाह के रंग में सराबोर कर दिया। 'छाप तिलक सब छीने मासे नैना मिलायके ..' की गूंज ने माहौल को उत्साह से लबरेज कर दिया। दूसरी तरफ उन्होंने 'हसीन जुल्फ को यूं न बिखरा, दिन

वारसी बन्धु कव्वाली 'छाप तिलक सब मोसे नैना मिलायके' प्रस्तुत करते हुए।

में ही शाम कर दे, तेरी नजर ऐसी है कि कत्लेआम कर दे' जैसे शेरों से दुनयावी मामलात की झलकें भी पेश कीं। अंत में उन्होंने 'दमादम मस्त कलंदर' कव्वाली से मौजूद श्रोताओं को झूमने पर विवश करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल के तत्वावधान में भी सूफी कव्वाली का आयोजन किया गया।

मोहम्मद अहमद खाँ वारसी के साथ खालिद हुसैन (हारमोनियम), जनाब हामिद हुसैन (कोरस), गुलाम रसूल साहब (कोरस), वारिस नवाज साहब, पुत्र मो. अहमद खान (तबला), रईस अहमद साहब (ढोलक), मो. रफी साहब (ढोलक) संगत पर मौजूद थे। कार्यक्रम का सफल संचालन डा0 महेश आलोक ने किया।

'छाप तिलक सब छीने मौसे नैना मिलायके..'

सिपक मैके द्वारा सूफी कव्वाली का आयोजन

वारशी बन्धु, अध्यक्ष एवं सलाहकार समिति के साथ।

फिरोजाबाद के जिलाधिकारी सुरेन्द्र सिंह अतिरिक्त जिलाधिकारी शेषमणि पाण्डेय एवं मुख्य विकास अधिकारी सुरेश कुमार राठौर वारशी बन्धुओं द्वारा प्रस्तुत कव्वाली का आनन्द लेते हुये।

कव्वाली

कव्वाली भारत और पाकिस्तान में प्रचलित इस्लामी भक्ति गीत का एक पारम्परिक रूप है। कव्वाली शब्द अरबी शब्द 'कौल' जो स्वयंसिद्ध है, से भी उत्पन्न है। कव्वाल वे हैं, जो कव्वाली गाते हैं कव्वाली उत्तरी भारत और पाकिस्तान के आध्यात्मिक और कलात्मक जीवन से जूड़ी हुई है। ''कव्वाली जो बांधा न जा सके'' सूफी परम्परा से जुड़ा हुआ है, सूफीवाद इस्लामी सोच का एक रहस्यमय स्कूल है जो सच और प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभवों के द्वारा दिव्य प्रेम प्राप्त करने का प्रयास करता है। अरबी में इस रहस्यवाद को तसव्वुफ़ के रूप में जाना जाता है।

होली पर राग और रंगों का जलवा

- **कार्यक्रम विषयः** कान्हा के हाथ कनक पिचकारी
- **दिनांकः** 18 मार्च 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कलाकारः** पं. विष्णुदत्त शास्त्री एवं साथी, वृन्दावन

भारत की संस्कृति कदम–कदम पर जीवन के असली आनंद का अहसास कराती रहती है। त्यौहारों पर यह संस्कृति अपने पूरे सौष्ठव के साथ अपना परिचय देती है। उल्लास और उमंग की लहरों के संग जीवन के सागर में व्यक्ति रोजमर्रा की परेशानियों से विमुक्त सा होकर हंस के समान विचरण करने लगता है। इस संदर्भ में होली का त्यौहार अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। पूरे देश में मनाये जाने वाले इस पर्व का असली कौतूहल देखना हो तो ब्रज में आना ही पड़ेगा। और अगर आनंद में डूब कर सराबोर होना है तो ब्रज के कलाकारों से रूबरू हुए बिना काम चलने वाला नहीं है। बसंत पंचमी से शुरू होने वाला उल्लास होली के दिन चरम पर होता है। रंगों के इस त्यौहार को लोक गायन की परंपरा के साथ जोड़ कर ब्रजमंडल में अद्‌भुत प्रयोग देखने को मिलते हैं।

राग और रंग का पर्व होली बसंत का संदेशवाहक भी कहा जाता है। राग और रंग को पूरे उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिये होली पर प्रकृति भी विविध रंगों को समेटे हुए अपने चरम यौवन पर होती है।

शब्दम ने ब्रज के कलाकारों के साथ होली की पूर्व

विष्णुदत्त शास्त्री एवं साथी ब्रज की होली गायन प्रस्तुत करते हुये।

संध्या पर फाग गायन समारोह का आयोजन हिन्द परिसर स्थित श्री सिद्धेश्वरनाथ मंदिर में किया। शब्दम अध्यक्ष सहित हिन्द परिवार के लोगों ने सपरिवार उपस्थित होकर पर्व का आनंद लूटा। ब्रज के कलाकारों ने कष्ण भक्ति के भजनों से गायन की शुरूआत कर होली के विशिष्ट लोकगीतों तक समां बांधा। स्वर और संगीत की धारा के बीच वहां मौजूद हर किसी के कदम थिरकने लगे। बाद में फूलों की होली के साथ समापन किया गया।

कलाकारों की टोली के पं. विष्णुदत्त शास्त्री (हारमोनियम), उदय नारायण (सहगायक), शत्रुघ्न प्रसाद तिवारी (सहगायक), आकाश (की बोर्ड), सागर तिवारी (तबला), सुनील कुमार उपाध्याय, (नाल/ढोलक), पंकज द्विवेदी (पैड) व रूप नारायण ने अपनी कला के प्रदर्शन से वाहवाही लूटी।

गायन में भाव विभोर कु. गीतिका के साथ हिन्द परिसर की महिलायें।

ब्रज की होली गायन में भाव विभोर उपस्थित जन समूह।

कृष्ण एवं राधा के भाव में लीन अध्यक्ष किरण बजाज

बुद्ध और धन–मन का प्रबन्धन

- **कार्यक्रम विषयः** भगवान बुद्ध के दर्शन के आलोक में प्रबन्धन
- **दिनांकः** 17 मई 2010
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित वक्ताः** डॉ. श्यामवृक्ष मौर्य, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, आर्दश कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद

भगवान बुद्ध और उनके संदेश आज भारत की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत के रूप में दुनिया के लोगों को रास्ता दिखा रहे हैं।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक और विश्व के महान व्यक्तियों में स्थान रखने वाले बुद्ध ने 483 ई.पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में जन्म लिया। गोत्र के कारण गौतम उनके साथ जुड़ा। कहा जाता है कि उनके जन्म के सातवें दिन ही उनकी मां चल बसीं। लेकिन ज्योतिषियों ने घोषणा की यह बालक बड़ा होकर संसार का महान व्यक्ति अथवा संत बनेगा। जीवन की पवित्रता बनाये रखना, जीवन में पूर्णता प्राप्त करना, निर्वाण प्राप्त करना, तृष्णा का त्याग, सभी संस्कारों को अनित्य मानना तथा कर्म को मानव के नैतिक उत्थान का आधार मानना उनके प्रमुख संदेश हैं।

शब्दम् के तत्वावधान में हिन्द लैम्प्स के प्रशासनिक सभागार में बुद्ध जयंती मनायी गयी। कार्यकारी निदेशक ने कहा कि उनकी शिक्षा को एक कुशल प्रबंधक के रूप में भी अपना कर जीवन को सफल बनाया जा सकता है। जयंती समारोह में मुख्य वक्ता आदर्श कृष्ण महाविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डा. श्यामवृक्ष मौर्य ने बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बुद्ध का दर्शन क्षणवाद है। वे संसार से मोह नहीं करने की सलाह देते हैं। उनकी दृष्टि से संसार क्षण–क्षण परिवर्तनशील है। मनुष्य का अंतिम उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति होना चाहिए। बुद्ध इस बात के पक्ष में थे कि धन का संचय जनहित के लिए हो। उन्होंने मन के प्रबंधन पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि सबसे पहले अपने मन एवं इंद्रियों को वश में करो।

डा. श्यामवृक्ष मौर्य विचार गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में विचार प्रगट करते हुये।

कविता चली गाँव की ओर

- **कार्यक्रम विषयः** ग्रामीण कवि सम्मेलन
- **दिनांकः** 15 जून 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कलाकारः** श्री उदय प्रताप सिंह, श्री प्रताप दीक्षित, श्रीमती व्याख्या मिश्रा, श्री निर्मल चन्द्र सक्सेना, श्री केशव शर्मा, चन्द्र प्रकाश यादव 'चन्द'

असली भारत आज भी गांवों में बसता है। कृषि प्रधान इस देश में भले ही किसान को भगवान का दर्जा दिया जाता है, लेकिन उनका जीवन वास्तव में उतनी ही अधिक विसंगतियों से भरा है। शब्दम् ने गांवों की मलिन हो रही सभ्यता में सांस्कृतिक सरोकारों को सिर उठाने का उचित अवसर प्रदान करने की शुरुआत की है। ग्रामीण कवि सम्मेलन के द्वारा खेत की माटी में साहित्यानुराग के बीज बोने का क्रम बदस्तूर जारी है।

इस बार के ग्रामीण कवि सम्मेलन का आयोजन शिकोहाबाद विकास खण्ड के गांव लखनपुरा स्थित आश्रम पर किया गया। सनातन परंपरा के देवी देवताओं के मंदिरों के साथ–साथ प्राकृतिक सुषमा से भरे पूरे इस स्थल की एक आध्यात्मिक केंद्र जैसी मान्यता है। 15 जून को कवि सम्मेलन वाले दिन गुरूपूर्णिमा के सुयोग ने वहां के लोगों का उत्साह दुगना कर दिया। ग्रामीण कवि सम्मेलन के क्रम की सर्वाधिक भीड़ इस समारोह

काव्य पाठ करती व्याख्या मिश्रा।

में उमड़ी। कवियों की सरस वाणी और परिवेश के अनुकूल काव्यपाठ में ग्रामीण जन इस कदर बंध गये कि यकायक आयी बेमौसम तेज बारिश में भी टस से मस नहीं हुए।

वरिष्ठ कवि और पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में व्याख्या मिश्रा (लखनऊ), निर्मल सक्सेना (कासगंज), डा. केशव शर्मा (आगरा), प्रताप दीक्षित (आगरा) एवं चंद्र प्रकाश यादव (फिरोजाबाद) ने अपनी रसमयी रचनाओं से श्रोताओं को रस सिक्त किया। समारोह का संचालन करते हुए सलाहकार मंडल के डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया एवं मुकेश मणिकान्चन ने भी अपना काव्यपाठ किया। लखनपुरा ग्राम्य कवि सम्मेलन में ग्रमीण श्रोताओं ने काव्य की पूरी समझ का परिचय दिया। खेतों में हल चलाने वाले किसान और मजदूरों के हाथ सुधी श्रोताओं की भांति एक–एक पंक्ति पर उसके रुझान के अनुरूप ताली बजाने के लिये उठते रहे।

लखनपुरा आश्रम में आयोजित ग्रामीण कवि सम्मेलन के लिए मुंबई से शब्दम् के उपाध्यक्ष नंदलाल पाठक द्वारा भेजे गये संदेश को प्रस्तुत किया गया। संदेश में श्री पाठक ने कहा कि ''ग्रामीण जीवन के चित्रण ने सूरदास को महाकवि का आसन प्रदान किया। ऐसे आयोजन कर शब्दम् स्वयं को धन्य मानता है''।

ग्रामीण कवि सम्मेलन ग्राम लखनपुर में आयोजित कवि सम्मेलन में उपस्थित श्रोतागण।

काव्य पाठ करते निर्मल सक्सेना।

शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धर्म से और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।

– मनुस्मृति

काव्य पाठ करते मुख्य अतिथि उदय प्रताप सिंह।

कुछ चुनिंदा कविताएं –
श्री उदय प्रताप सिंह

आजादी का सूरज चमका शहरों के आकाश में,
गांव पड़े हैं सभी गुलामी के इतिहास में,
गांव मजदूर देता, खेत खलिहान देता,
वास्ते जीने के सभी सामान देता,
गांव शहरों की चलाचली से अच्छा लगता है,
उगता सूरज सांझ ढली से अच्छा लगता है।

प्रताप दीक्षित

जन्मः 7 जनवरी 1932 ग्राम–परा, जनपद–भिण्ड, म.प्र.

प्रकाशित रचनाएँः बॉसों के वन, अंजुरी भर बाजरा, हमाई बोली हमाए गीत (काव्य संग्रह) 'विवरणिका' मासिक पत्रिका–दूर संचार विभाग, आगरा का कई वर्ष तक सम्पादन।

सम्मानः नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा, अ. भा. मीरा साहित्य संगम धौलपुर, डॉ. कमलेश स्मृति प्रकाशन संस्थान आगरा, भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, संस्कार भारती आगरा, कविरत्न सत्य नारायण स्मृति संस्थान, तोरा आगरा, आदि में सार्वजनिक सम्मान।

संपर्कः 34–ए, इंदिरा कॉलौनी, शाहगंज, आगरा–282010 दूरभाष– 0562–2213401

का समझत हौ

तुम अपने कों का समझत हौ?
कबहुँ उतै तौ कबहुँ इतै हौ।
का जाने तुम कितै–कितै हौ।
आग वहीं पै जरन लगत है–
पहुँच जात तुम जितै–जितै हो।
बेपैंदी के लोटा जैसे–
जाने कहाँ–कहाँ लुढ़कत हौ।
तुमने खेली अपनी पारी।
जब आई औरन की बारी।

भाग गये मैदान छोड़ कें–
संगी देत रह गये गारी।
दूर–खड़े हुइ डर के मारें–
छुप–छुप झाड़िन सौं उझकत हौ।

छुइ सिड़िडन पै आगें चढ़कें।
बातें करन लगे बढ़–बढ़ कें।

भूल गये वे दिन आँखन सौं–
कींचर बहत हतो कढ़–कढ़ कें।
जनम–पत्र हम बाँचे तौ तुम–
मरखा बद्धा से बिझकत हौ।

तुम कवि कम हौ, पंडा ज्यादा।
कविता कम, हथकंडा ज्यादा।
सच्ची कहियो कैसें हुइ गये–
गोबर कम औ कंडा ज्यादा
दुनियाँ तौ रपटत काई में–
तुम तौ सूखे में रपटत हौ।

– प्रताप दीक्षित

निर्मल चन्द्र सक्सेना

जन्मः 16 जून 1959

सम्मानः काव्य महोदधि (सूकर क्षेत्र शोध संस्थान) सूकर क्षेत्र, गांधी स्मृति साहित्य सम्मान 2009 (हापुड़) सद्भावना गौरव (कासगंज) सूरज प्रसाद डागा साहित्य सम्मान 2010 (कासगंज)। **संस्थापकः** संकल्प साहित्य, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था (1988) सन् 1990 ई0 से निरन्तर श्री विजय दशवीं महोत्सव पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन एवं 'संकल्प रत्न', 'संकल्प गरिमा' से जाने माने साहित्यकारों एवं समाज सेवियों का अलंकरण एवं अभिनन्दन।

संपर्कः किला शंकरगढ़, कांशीराम नगर–207123, उ0प्र0 दूरभाषः 09359949525

नेह निमंत्रण

जब पनिहारिन की गगरी सा
सावन छलके आंगन में।
तुम नेह निमंत्रण जान प्रिये
आ जाना मिलने उपवन में।।

तेरे स्वागत् में पिया मेरे
सौ–सौ सिंगार रचाऊँगी।
बिंदिया कजरा गरा मेंहदी
अपना हर अंग सजाऊंगी।
प्रिय हरसिंगार की महक उठे
चम्पा चहके जब यौवन में।
प्रिय अर्ध लगाने को नयनों से
अविरल धार बहा दूंगीं।

मन की बगिया को महका कर
पुष्पों की झड़ी लगा दूंगीं।।
कागा मुंडगेरी पर बोले
कोयलिया गाये बागन में।
डालीडाली हो मतवाली
जब गावें मल्हारें गांमन में।
ढोलक की थापें गुमक उठें
किलकारीं गूँजें आंगन में।।
यौवन मतवाला हो–हो कर
पायल छनकाये पांवन में।
तुम नेह निमंत्रण जान प्रिये
आ जाना मिलने उपवन में।।

– निर्मल चन्द्र सक्सेना

काव्य रस से सराबोर हुए श्रोता

सिरसागंज। सिद्ध आश्रम लखनपुरा में साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित संस्था शब्दम् ने विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया। ग्रामीणों ने समारोह में देर तक साहित्य की विभिन्न विधाओं का रसानुवाद लिया।

साहित्यकार एवं पूर्व सांसद उदयप्रताप सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में सरस्वती के

प्रस्तुतिकरण किया। प्रताप दीक्षित ने ग्रामीण परिवेश और आमजन जीवन से जुड़ी रचनाओं को प्रस्तुत कर ग्रामवासियों का मनोरंजन व ज्ञानवर्धन किया। हिन्दी संस्थान के डा. केशव शर्मा ने ब्रजभाषा की मधुर रचनाओं को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुकेश मणिकांचन एवं डा. धुवेंद्र भदौरिया ने रचना पाठ किया। इससे पूर्व शब्दम सलाहकार मंडल के डा.

ने समारोह की व्यवस्थाओं को अंजा
दिया। आश्रम में पर्यावरण मित्र का स्टा
लगा कर लोगों को जागरूक किया गया

डॉ0 केशव शर्मा

शिक्षाः एम0ए0,एम0एड0, पी–एच0डी0 **प्रकाशनः** आकाशवाणी आगरा तथा टीवी नेटवर्क से कविताएं प्रसारित। कुछ रचनाएं आकाशवाणी के समस्त केन्द्रों से प्रसारित श्रेष्ठ कविताओं के चयन के पश्चात बी.बी.सी. (लन्दन) से भी प्रसारित। **सम्प्रतिः** क.मुं. हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ0 भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा के हिन्दी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत। **सम्मानः** 'भारत विकास परिषद' (आगरा), 'भारतीय साहित्यकार समिति' (आगरा), 'खत्री सभा' (कानपुर), 'कालिंदी साहित्य मंच' (मथुरा), 'सूकरक्षेत्र शोध संस्थान' (कासगंज) द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत। **संपर्कः** 30, न्यू विजय नगर कालोनी, आगरा

सोनचिरइया

जे हरियाली खेतन की, औ सघन कुंज की छइया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं, तहाँ देखी सोनचिरइया रे।।
भइया रे, ओ भइया रे, भइया रे।

अब ते वह जा अँगना आई, मन में उठी हुलास।
अम्मा–दादी के मुँह उतरे, बाबा भये उदास।।
कछु बड़े–बढ़े यों बोले, कोई बात नंहिं भाई।
अपनौ–अपनौ भाग हमारे, घर में लक्ष्मी आई।।
ढोल–मंजीरा बाजे गाये, मंगल गीत बधइया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं,...

लगौ बीतवे बालापन औ, आवन लगी जुवानी।
संग–सहेलिन गुट्टा खेली, खेली गुड़िया रानी।
लहे कलेऊ बैठ मेड़ पै, रई बापू कूँ टेर।
बापू सतुआ खावै, तौ लौ ललिया तोरे बेर।।
गाढ़ौ मठा फेरि अम्मा ने, भरिके दई मलइया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं, ...

देखि लली कूँ बड़ी भई, सबके मन आयौ सोच।
पीरे हाथ करौ जाके अब, लरिका लाऔ खोज।
एक सुघर तै बाबूल ले, बाकी करी सगाई।
माघ माह की पूनौ कौ बारात लली की आई।।
झूमे सब आँगन–गलियारे, झूमे ताल–तलइया रे।
हम जा गॉव के बासी हैं, ...
घर–घर तै आयौ मठा–दूध, औ आई है चरपइया।
तोरन द्वारा बने केला के, झंडी बाँधे भइया।
हुलसाये से फूफा–मौसा, चच्चा खोदें भट्टी।
बब्बा लै आये अइया सौ, देसी घी की कट्टी।।
भट्टी तपवे लगी चढ़ाई, बा पै बड़ी करहइया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं, ...

सांझ भई तौ द्वार लली के, आय गई बारात।
बालक–बूढ़े झूमन लागे, पुलक उठे सब गात।।
सजे–धजे बाराती आये, खूब लगाये इत्र।
दूल्हा के ढिंग बैठ ठिठोली, करि रहे बा के मित्र।
देखि लला कौ रूप, लली की अम्मा लेत बलइया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं,...

द्वार चार हवै गयौ, और तब सुरू भई ज्यौनार।
पुरी–कचैरी, मठा के आलू, धरी मिठाई चार।
भिंडी आई, कदुआ आयौ, ता पाछै सर्राटौ।।
समधी मगन भये गारी सुनि, मुड़ि–मुड़ि तकै अटरिया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं,...

सजी धजी सी बनी दुल्हनियां, जब मण्डप में आई।
रूप देखि तब बाकी अम्मा, मन ही मन हरसाई।
पंडित जी भाँवर डरवावे, सखियाँ मंगल गावै।
रौल–चौल हे रई आँगना, कछु आवें कछु जावें।
जोड़ी ऐसे जंचे कि जैसे राधा और कन्हैया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं,...

जब डोली द्वारे पै आई, सब हवै गये उदास।
अब तौ भई पराई ललिया, छूटी सबकी आस।
अँखियन में अँसुआ भरि आये, ढरकि उठे गालन नै।
अम्मा के जिय हूक उठी, बो बैठी पेट पकरिकै।
डोली बैठ चली जब ललिया, सुनी भई मड़रया रे।
हम जा गाँव के बासी हैं, तहाँ देखी सोनचिरइया रे।।
भइया रे, ओ भइया रे, भइया रे।

– डॉ0 केशव शर्मा

चन्द्र प्रकाश यादव 'चन्द'

जन्मः 4 सितम्बर 1950, फिरोजाबाद (उ0प्र0) **शिक्षाः** समाज शास्त्र, इतिहास एवं राजनीतिक शास्त्र में एम0ए0।

प्रकाशित कृतियांः गोपी गर्जना, ज्ञान को पंडित है गयों गूंगौ, ब्रज की बांसुरी, गुरू गीता।

सम्मानः ब्रज विभूति की उपाधि (अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम मथुरा), काव्य कला रत्न, (संस्कार भारती) अभिनन्दन पत्र (मदर इण्डिया स्कूल, अखिल भारतीय साहित्य परिषद फिरोजाबाद)।

संपर्कः 6, कटरा पठानान, फिरोजाबाद मो.: 9897145508

तम्बाकू

गुटखा औ तम्बाकू के आदी बहु लोग भये
किन्तु परिणाम याकौ काऊनें न जांचौ है।
भूख कूं भजाबै औ गला बै सिग फेंफड़न
तौऊ करिसेबन खूब झूमि–झूमि नांचौ है।
अबहू न चेते 'चन्द' नेंन मूंदि बैठे आप,
कंचन सी काया कौ सूखि गयौ ढांचौ है।
गुटखा तम्बाकू कौ मिलि कें सब त्याग करौ,
अधबर ही मारै यह काल कौ तमांचौ है।

शब्दम्

मैडम बजाज कौ काम अतिसराहनीय,
भेद नांहि राखत पराये अरू खास में।
ग्रामीण अंचल तें शब्दम जो बिलुप्त भये,
शब्दम् की शक्ति उन्हें लाबैगी प्रकाश में।
जग की कुरीनिनि कूं जड़तें जि काटि रहो,
कीर्तिध्वज याकौ सदा फहरै अकाश में।
शब्दम् दिन दूनी राति चौगुनी प्रगति करै,
आये कबि 'चन्द' यहॉ याही अभिलास में।

प्रदूषण

तुम वृक्ष सिंगारमही का करो
यह वृक्ष धरातल भूषण हैं।
महकाबत जीवन की बगिया नित
दीननु के दुखः पूषण हैं।
फलदायक चन्द सबै जग में
रवि की छवि को खरदूषण हैं।
जल वायु कों स्वच्छ सदैव रखें
करते यह दूर प्रदूषण हैं।

'कल्पतरु'

घर का आंगन
नाचते मोरों की उमंग
खिलते फूलों की तरंग
सरसों की क्यारी का बसंती– रंग
हरियाली देखते ही झूम उठा अंतरंग !

अंतरंग में गमक उठा एक गीत
गीतिका ने चित्रित का आकार
दिखाए कुदरत के गीत
सुबह शाम प्रकृति की किरणों की
आभा दमक उठी कणकण में !!

प्रकृति ने रंगमंच सजाया
चिड़ियों ने गाना गाया
मोरों ने नाच दिखाया
तोतों ने बारंबार गुनगुनाया
हमने दूर बैठे ही– आनन्द मनाया !!!

– डॉ. ज्ञानवती दरबार

८७ वर्षीय डॉ. ज्ञानवती दरबार भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की निजी सचिव थीं। जब उनकी दौहित्री ने शिकोहाबाद स्थित 'कल्पतरु' भवन का विवरण उन्हें सुनाया तो उन्होंने कल्पना से उसका जो शब्द चित्र बनाया वह यहां दे रहे हैं।

जयंती धनिया और गोबर के रचयिता की

- **कार्यक्रम विषयः** मुंशी प्रेमचन्द जयन्ती
- **दिनांकः** 31 जुलाई 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कलाकारः** हिन्द परिसर में निवासी बच्चे
- **आमंत्रित मुख्य अतिथिः** श्री राजेन्द्र यादव, प्रबन्धक–प्रधानाचार्य, द एशियन पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद

सन 1880 ई. में बनारस की माटी में जन्मे धनपत राय ने मुंशी प्रेमचन्द के नाम से ख्याति पायी। उनका जन्म गहरे अभावों में व्यतीत हुआ। फिर भी उन्होंने स्नातक कर लिया। शुरूआत में अध्यापन को उन्होंने अपना करियर बनाया, लेकिन यह उनकी मंज़िल नहीं थी। बाद में वे मास्टरी से इस्तीफा देकर पूरी तौर पर सृजन की प्रक्रिया में डूब गये। 1936 में इस महान कहानीकार का देहावसान हुआ। प्रेमचन्द समय से आगे की सोच रखने वाले व्यक्ति थे। उनकी रचनाओं में विसंगतियों पर करारा व्यंग्य देखने को मिलता है। उनकी लेखनी ने देश की सामान्य जनता को इस बात के लिए दृढ़ किया कि वह भी अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद तथा उनके पोषक ज़मीदारों एवं देशी राजाओं के खिलाफ लड़ सकते हैं। उनकी कहानियां 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचन्द का निबंध तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी व्यापक योगदान

मंच पर प्रस्तुत नाटक का एक दृश्य।

है। रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान उनके प्रमुख उपन्यास है। वे साहित्य को परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति, दलित का शोषण, समाज में नारी की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन उनके प्रिय विषय हैं। इसके अलावा पशु–पक्षियों को भी उनके साहित्य में बेमिसाल आत्मीयता मिली है। बड़ी और गंभीर बातों को भी उनके साहित्य में सरल और सहज भाषा में कहा गया है। भाषा सजीव और मुहावरेदार है।

'गोदान' में धनिया और गोबर जैसे लोकप्रिय चरित्रों की रचना हुई है। 131 वीं जयंती पर शब्दम् ने उनका भावभीना स्मरण किया। विभिन्न स्थानों पर शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में जयंती मनायी गयी। हिन्द परिसर स्थित शब्दम् वाचनालय में 'पंच परमेश्वर' का नाट्य मंचन किया गया। द एशियन स्कूल के प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य श्री राजेन्द्र यादव सहित अतिथियों ने मुंशीजी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये।

जयंती की पूर्व संध्या पर ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल में महान कथाकार की याद में संस्कार भारती नाट्य केंद्र आगरा के बाल कलाकारों ने उनकी कहानी 'ईदगाह' का नाट्य मंचन किया।

नाट्य मंचन का संचालन करती रेखा शर्मा।

नाटक का आनन्द लेते स्कूली बच्चे।

प्रेमचन्द द्वारा लिखित नाटक 'ईदगाह' का मंचन।

छऊ नृत्य की विधा ने किया मंत्रमुग्ध

- **कार्यक्रम विषयः** पुरूलिया छऊ
- **दिनांकः** 29 जुलाई 2011
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके की संयुक्त प्रस्तुति
- **आमंत्रित कलाकारः** उड़ीसा के कलाकार

सिरसागंज के ब्राइट स्कालर्स एकेडमी के तत्वावधान में वहां के सुमंगलम हॉल में शब्दम एवं स्पिक मैके की ओर से सांस्कृतिक लोक नृत्य समारोह का आयोजन किया गया। सुदूर पूर्व भारत के उड़ीसा से आये लोक कलाकारों ने छऊ नृत्य की प्रस्तुति से नन्हें स्कूली छात्र–छात्राओं के साथ आये हुए अन्य अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कलाकारों ने मंच पर जैसे ही नृत्य की विशेष वेशभूषा में प्रवेश किया, सभागार में कौतूहल बिखर गया। वंदना से शुरू हुई कई चरणों की इस प्रस्तुति में नृत्य के माध्यम से महिषासुर मर्दनी के अवतार को जीवंत किया गया। नृत्य के अलावा भाव दृश्यों एवं अभिनय का बेजोड़ संगम दिखाई दिया। देवताओं और असुरों के बीच हुए युद्ध, शक्ति का प्राकट्य, असुर मर्दन, एवं सिंह की गर्जना जैसे चित्रण ने खूब वाहवाही लूटी। सिरसागंज के नगरपालिकाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह, पूर्व पालिकाध्यक्ष सरोज शर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी पंडित जगदीश प्रसाद शर्मा आचार्य सहित बड़ी संख्या में बुद्धिजीवी वर्ग एवं समाजसेवी संगठनों के लोग उपस्थित हुए। जिन्होंने आयोजन की मुक्तकंठ से सराहना की। समारोह का शुभारंभ सिरसागंज के समाजसेवी श्री श्याम कुमार गुप्ता ने किया।

कलाकारों ने बिखेरा जलवा

महिषासुरमर्दनी का सजीव मंचन किया

अमर उजाला ब्यूरो

शिक्षकों से भी उम्मीद की जानी चाहिए

- **कार्यक्रम विषयः** शिक्षक दिवस
- **दिनांकः** 5 सितम्बर 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **सम्मानित शिक्षकः** सुमनलता द्विवेदी, डा. ओ.पी. सिंह, डा. आशालता गुप्ता एवं डा. राजीव गुप्ता

'देश भर में प्रचलित लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने युग निर्माण में किस तरह का योगदान किया है इस पर कई तरह की राय हो सकती है, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि चरित्र और संस्कारों की शिक्षा देने में शिक्षक का सबसे अहम किरदार हो सकता है। लेकिन शिक्षक अपने दायित्व से विमुख होकर भ्रष्टाचार करने लगे तो युग–निर्माण का ऐजेंडा धूल में पड़ा सिसक रहा होगा। इस प्रकार की परिस्थितियों के दृष्टिगत डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस पर शब्दम् ने एक फिर से शिक्षकों को आइना दिखाने का विनम्र प्रयास किया। नयी पीढ़ी की चरित्र निर्माण एवं संस्कारशीलता से होते हुए युग निर्माण तक पहुंचाने में शिक्षक अपनी भूमिका को प्रबल बनाएं'– शब्दम् ने इस भाव से शिक्षकों को अवगत कराया। चार श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित भी किया गया।

हिन्द लैम्प्स स्थित 'कल्पतरु' के चिंतन भवन में शिक्षक दिवस के अवसर पर अध्यक्ष श्रीमती बजाज ने कहा कि 'शिक्षा का अभिप्राय सर्वांगींण विकास करना है। लेकिन आज की शिक्षा केवल भौतिक पक्ष को ही आधार प्रदान करने में सक्षम

बायें से उमाशंकर शर्मा, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, मंजर उल–वासै, डा. सुमनलता द्विवेदी, डा. आशालता गुप्ता, किरण बजाज, डा. ओ.पी. सिंह, डा. महेश आलोक, डा. राजीव गुप्ता, मुकेश मणिकान्चन।

हैं। पाठ्यक्रमों मे अगर सात्विक भाव को प्रबल करने की बातें हैं, तो उन पर किसी का पर्याप्त ध्यान नहीं है। हमारी शिक्षा पद्धति में संस्कारों को सात्विक ओज से परिपूर्ण बनाने के पाठ नगण्य हैं। शिक्षा का अर्थ है– मन का सुधार–परिष्कार। सच्चा भारतीय आदर्श सादा जीवन उच्च विचार है। लेकिन सादगी को अब गरीबी मान लिया गया है। लोग दिखावटी जीवन जीने लगे हैं। 'स्टैण्डर्ड आफ थिंकिंग' ही 'स्टैण्डर्ड आफ लिविंग' हैं। हमें फिर से सही अर्थों में जीवन को दिशा देनी होगी। जीवन का अर्थ है त्याग–तपस्या– परोपकार एवं सेवा आदि। इन मूल्यों को पिरोने में आज का शिक्षक क्यों पिछड़ रहा है। वह गुरु की पदवी पर विराजमान है। क्यों अपनी इस महती जिम्मेदारी को भूला हुआ है वह।'

इस क्रम में डा. महेश आलोक ने युगप्रवर्तक साहित्यकार अज्ञेय के निबन्ध 'शिक्षक के मूल्य' के माध्यम से विषय को और स्पष्ट किया। मुकेश मणिकांचन ने शब्दम् उपाध्यक्ष प्रो. नन्दलाल पाठक का संदेश पढ़ते हुए कहा कि ''आजादी की लड़ाई में शिक्षकों का योगदान सबसे आगे था। डा. राधाकृष्णन उस समय के प्रेरणा पुरुष थे। वह भारतीय ऋषि परम्परा के भी साक्षात स्वरूप थे। आज के शिक्षक बंधु अगर उनसे कुछ आदर्श लेना चाहते हैं तो वह सिर्फ इतना करें कि वे राजनीतिक प्रदूषण से बच कर आदर्शों की रक्षा करते रहें। इससे मिलने वाला संतोष बड़ी उपलब्धि होगा''। वरिष्ठ सलाहकार उमाशंकर शर्मा का कहना था कि चरित्र निर्माण का दायित्व परिवार से लेकर शिक्षक के कंधों तक होता है। घर और स्कूल में बच्चे जैसे चरित्र की झांकी पाते हैं, वही उनमें प्रतिफलित होने लगता है।

आदर्श शिक्षक के रूप में सम्मानित जवाहर नवोदय विद्यालय फिरोजाबाद की प्राचार्या सुमनलता द्विवेदी, डा. ओ.पी. सिंह, प्राचार्य, पालीवाल महाविद्यालय शिकोहाबाद, डा. आशालता गुप्ता, पूर्व रीडर हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी बालिक महाविद्यालय, फिरोजाबाद एवं डा. राजीव गुप्ता, प्रवक्ता, राजकीय इण्टर कालेज, रठेरा, मैनपुरी ने अपने संबोधन में अपने शिक्षक साथियों की चेतना जगाने का काम किया।

सम्मानित शिक्षकों को अंगवस्त्र एवं सम्मान पत्र भेंट किया गया। संचालन मुकेश मणिकांचन ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया।

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सम्मानित नारी शक्ति केन्द्र की संचालिका सुषमा मिश्रा।

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सम्मानित शिक्षिकाओं/कार्यकर्ताओं के साथ बायें से दीपिका मिश्रा, प्रभा सिंह, किरण बजाज, माया शर्मा, रेखा शर्मा, शीनू ,नीलम चतुर्वेदी, सविता शर्मा।

खयाल गायकी में सुधबुध भूले श्रोतागण

- **कार्यक्रम विषयः** स्वर सुधा
- **दिनांकः** 14 सितम्बर 2011
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमंत्रित कलाकारः** अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खयाल शास्त्रीय गायक डा0 हरीश तिवारी

16 और 17 सितंबर को फिरोजाबाद, शिकोहाबाद और सिरसागंज में ठुमरी, राग मल्हार और भजनों के स्वर गूंजे। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खयाल शास्त्रीय गायक डा0 हरीश तिवारी ने अपने शास्त्रीय गायन से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। साहित्य, कला और संगीत को समर्पित संस्था शब्दम और स्पिक मैके के सहयोग से गायन समारोह का आयोजन किया गया था। फिरोजाबाद के दाउदयाल महाविद्यालय में ईश वंदना के बाद गायक डा0 हरीश तिवारी ने ठुमरी और खयाल सुनाये। उन्होंने जब गीत बदरा बरसे घुमड़–घुमड़ सुनाया तो श्रोता सुधबुध भूल गये और हाल में तालियों की गड़गड़ाहट गूंजती रही। उन्होंने 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' की प्रस्तुति से भी समां बांधा।

शिकोहाबाद के हिन्दलैम्प्स में शब्दम अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने समारोह का शुभारंभ किया। डा. महेश आलोक ने डा0 हरीश तिवारी का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि डा0 हरीश तिवारी की गायन यात्रा ठाकुर चौबे के निर्देशन में सुदूर पूरब के देवरिया जनपद से शुरू हुई। वर्तमान में वे दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत और

पं हरीश तिवारी खयाल गायन प्रस्तुत करते हुये। उनके साथ तबले पर संगत करते पं विनोद लेले, हारमोनियम पर शंकर गणेशन।

कला विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।

हिन्दलैम्प्स में उन्होंने 'मियां मल्हार' से शुरू करते हुए 'बोले रे पपीहरा' जैसी लोकप्रिय बंदिशों को सुनाकर वाहवाही लूटी। कार्यक्रम का सफल संचालन डा0 महेश आलोक ने किया।

सिरसागंज के ब्राइट स्कालर्स एकेडमी में शब्दम और स्पिक मैके के संयुक्त तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खयाल शास्त्रीय गायक डा0 हरीश तिवारी ने अपनी गायन कला के स्वरों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। युवाओं को प्राचीन भारतीय संगीत की विधाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो कि सफल रहा। किराना घराने के मशहूर गायक डा0 हरीश तिवारी ने यहां पर मिर्जापुरी कजरी प्रस्तुत की। 'सवनवा में सजनवा न अइवे ननदी' को जोरदार तालियां मिलीं। उन्होंने ख्याल गायकी की बारीकियों से भी श्रोताओं को परिचित कराया। एकेडमी के संजय शर्मा और प्रवेश कुमार ने कलाकारों का विशेष रूप से स्वागत किया।

डॉ. हरीश तिवारी

दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत एवं कला विभाग में प्रध्यापक। अपनी संगीत यात्रा गुरू ठाकुर चौबे के मार्गदर्शन में प्रारंभ की। अपनी संगीत एवं अकादमिक यात्रा के लिए वह बनारस पहुँचे। पं. ओकारनाथ ठाकुर के शिष्य श्री अजीत भटाचार्य एवं आचार्य नंदन जी से ग्वालियर घराने में तालीम पायी। आचार्य कुंदनलाल शर्मा से आपने पंजाब से 'श्याम चौरासी' घराने के तत्वों को सीखा। इ न तालीमों को सीखते हुए पं. भीमसेन जोशी से 'किराना घराना' में दक्षता प्राप्त की। मशहूर रंगकर्मी बी.वी. कारंत की संस्तुति के पश्चात, गुरू शिष्य परम्परा के अंतर्गत भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी ने शिष्य के रूप में स्वीकृति दी।

पुरस्कारः आल इंडिया रेडियो 'ए' कलाकार, न े श ा न ल जूनियर फेलोशिप सहित कई पुरस्कार।

प्रस्तुतिः उ0प्र0 संगीत नाटय अकादमी, हिमाचल संगीत सम्मेलन, मल्हार महोत्सव, विष्णु दिगम्बर संगीत सम्मेलन, तानसेन समारोह ग्वालियर, बनारस का प्रसिद्ध संकट मोचन संगीत समारोह।

अन्य कई संगीत समारोहों में प्रस्तुतियां।

पं हरीश तिवारी के साथ शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्यगण एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति।

पं0 विनोद लेलेः

बनारस घराने के वरिष्ठ गुरू पं. काशी खण्डेकरजी से तबले की शिक्षा प्राप्त की, जो कि पं. अनोखेलालजी के वादन परम्परा से जुड़े हुए हैं। देश के सभी गायक वादकों के साथ तबला संगत कर चुके है।

शेखर गणेशन

हारमोनियम की शिक्षा बंगलोर के उच्चकोटि के हारमोनियम वादक न्यायमूर्ति कट्टी जी से प्राप्त की।

'किताबों से भी जोड़ा जा सकता है देश को'

- **कार्यक्रम का विषयः** सचल पुस्तक मेले का आयोजन
- **कार्यक्रम की तिथिः** 25 से 28 सितम्बर 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **मुख्य अतिथिः** श्री एम.ए. सिकन्दर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट

'पुस्तकें हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। यह संस्कृति और सभ्यता का दस्तावेज हैं। ज्ञान की अच्छी संवाहक हैं।' पुस्तकों के बारे में प्रबुद्धजनों की इस मान्यता के प्रचार प्रचार के लिये नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से शब्दम ने सितम्बर के दूसरे पखवाडे में सचल पुस्तक मेले का आयोजन किया। शिकोहाबाद तहसील के अलावा बाह तहसील में भी विभिन्न स्थानों पर पहुंच कर एनबीटी वाहन ने लोगों को, खासकर बच्चों और युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया।

इस अवसर पर हिन्द परिसर स्थित, कल्पतरू में नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री एम.ए. सिकन्दर

प्रदर्शनी में पुस्तकों का अवलोकन करतीं डा. रजनी यादव।

शिकोहाबाद में सचल पुस्तक प्रदर्शनी का उदघाटन करती शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज एवं डा. एम.ए. सिकन्दर।

की उपस्थिति में पुस्तकों पर चर्चा का आयोजन भी किया गया।

एनबीटी निदेशक श्री सिकन्दर ने चर्चा के दौरान कहा कि नेशनल बुक ट्रस्ट का उददेश्य किताबों की बिक्री करना नहीं, वरन बच्चों में किताबों के प्रति प्रेम को जगाना और बढ़ाना है। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों से इस कार्य में सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि बच्चे वही मानते हैं जो उनका शिक्षक उनसे कहता है। वे अपने मां–बाप की बात भले न मानें, पर अपने शिक्षक की बात अवश्य मानते हैं। हमारा उद्देश्य किताबों के माध्यम से पूरे भारत को जोडना है। श्री सिकंदर ने

सचल वैन के रूप वाले पुस्तक मेला में मौजूद विभिन्न भाषाओं वाली 10000 से अधिक किताबों की संक्षिप्त जानकारी चर्चा के दौरान दी।

इस चर्चा में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि आज की भाग दौड़ की ज़िन्दगी में लोग किताबों से दूर होते जा रहे हैं। पुराने समय में जब लोगों के पास मनोरंजन के साधन नहीं थे, तब किताबों से ही उनका मनोरंजन होता था। बचपन से ही बच्चों को किताबों से जोड़ना चाहिए। क्योंकि बडे होकर आदमी चाहे तो भी किताबों से नहीं जुड़ सकता। आज के समय में किताबें ही भारत की संस्कृति को जोड़ने का काम करती हैं। कार्यक्रम का सफल संचालन डा0 महेश आलोक ने किया। चर्चा में शब्दम् सलाहकार समिति के उमाशंकर शर्मा, मंजर उल वासै, डा0 ए.के. आहूजा, डा0 महेश आलोक, डा0 रजनी यादव आदि उपस्थित थे।

पुस्तकालय का उद्घाटन

साहित्य प्रेमियों के लिये हिन्द परिसर में 21 जुलाई 2011 को संस्कृति भवन में वाचनालय एवं पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया। सलाहकार मंडल के वरिष्ठ सदस्य श्री उमाशंकर शर्मा ने इसका उद्घाटन किया। हिन्द लैम्प्स के महाप्रबंधक वित्त श्री पी.के. धवन एवं सलाहकार मंडल के सदस्य मंजर उल वासै के साथ उन्होंने वाग्देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया। इस अवसर पर इन महानुभावों ने पुस्तकों की महिमा के बारे में कहा कि पुस्तकें व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकों का सानिध्य सभी के लिये लाभदायक है। उद्घाटन समारोह के पश्चात अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

चर्चा में भाग लेते एम.ए. सिकन्दर, निदेशक नेशनल बुक ट्रस्ट।

पुस्तकें

नहीं, इस कमरे में नहीं
उधर
उस सीढ़ी के नीचे
उस गैरेज के कोने में ले जाओ
पुस्तकें
वहां, जहां नहीं अंट सकती फ्रिज
जहां नहीं लग सकता आदमकद शीशा

बोरी में बांधकर
चट्टी से ढककर
कुछ तख्ते के नीचे
कुछ फूटे गम्ले के ऊपर
रख दो पुस्तकें

ले जाओ इन्हें तक्षशिला–विक्रमशिला
या चाहे जहां
हमें उत्तराधिकार में नहीं चाहिए पुस्तकें
कोई झपटेगा पासबुक पर
कोई ढूंढ़ेगा लॉकर की चाभी
किसी की आंखों में चमकेंगे खेत
किसी में गड़े हुए सिक्के

हाय–हाय, समय
बूढ़ी दादी–सी उदास हो जाएंगी
पुस्तकें
पुस्तकों !
जहां भी रख दें वे
पड़ी रहना इंतजार में

आएगा कोई न कोई
दिग्भ्रमित बालक जरुर
किसी शताब्दी में
अंधेरे में टटोलता अपनी राह

स्पर्श से पहचान लेना उसे
आहिस्ते–आहिस्ते खोलना अपना हृदय
जिसमें सोया है अनंत समय
और थका हुआ सत्य
दबा हुआ गुस्सा
और गूंगा प्यार
दुश्मनों के जासूस
पकड़ नहीं सके जिसे

– विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

किताबघर प्रकाशन की पत्रिका 'समकालीन साहित्य समाचार' के मुखपृष्ठ से साभार।

श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
जन्म:१९४० ग्राम रायपुर भैंसही (उ.प्र.) में।
हिंदी के प्रख्यात लेखक, कवि व समालोचक। दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित
सम्मान: 'व्यास' सम्मान (बिड़ला फाउंडेशन); 'हिंदी गौरव' (उ. प्र. हिंदी संस्थान); 'पुश्किन' सम्मान (भारत मित्र संगठन – मास्को, रूस) आदि।
संपादन: साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'दस्तावेज' १९७८ से अबतक नियमित।

जनपद में सुदूर तक पहुंचा 'प्रश्न मंच'

युवाओं और किशोरों में हिन्दी और उसके पठन पाठन को बढावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया प्रश्न मंच का आयोजन इस बार जनपद के अन्यान्य स्थानों से होते हुए गुरैया सोयलपुर जैसे सुदूर ग्राम तक जा पहुंचा।

सिरसागंज क्षेत्र में मैनपुरी जनपद की सीमा से सटे गांव गुरैया सोयलपुर में स्थित है फिरोजाबाद जिले का जवाहर नवोदय विद्यालय। देहात में स्थित यह आवासीय केंद्रीय विद्यालय अपनी बेहतर शैक्षणिक व्यवस्थाओं के लिये प्रख्यात है। शब्दम के प्रश्न मंच को कालेज ने पूरे मनोयोग से आयोजित कराया। शब्दम के विभिन्न कार्यक्रमों–समारोहों में अपनी सदाशयतापूर्ण उपस्थिति देने वाली प्राचार्या डा. सुमनलता द्विवेदी के कुशल निर्देशन में बड़ी संख्या में बच्चों की उपस्थिति ने उनके रूझान को स्पष्ट तो किया ही, बच्चों ने प्रश्नों के जवाब देने में भी उतनी ही रूचि दिखाई। प्रश्नों के जवाब देने वाले बच्चों को शब्दम सलाहकार मंडल के वरिष्ठ सदस्य एवं प्रश्न मंच के संयोजक–संचालक श्री मंजर–उल–वासै ने इनाम दिये तो बच्चों के चेहरों पर गर्व की चमक स्पष्ट दिखाई दी।

सिरसागंज के ब्राइट स्कालर्स एकेडमी में भी प्रश्न

पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद में प्रश्नमंच कार्यक्रम में उत्तर देने के लिए हाथ उठाते छात्र/छात्रायें।

मंच का बेहद सफल आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता श्री मुकेश मणिकांचन ने की। उन्होंने आयोजन का प्रारंभ कराते हुए शब्दम के प्रयासों पर विस्तार से प्रकाश डाला। हाईस्कूल स्तर के इस विद्यालय में छात्र–छात्राओं ने प्रश्न मंच का एक भी प्रश्न ऐसा नहीं था, जिसका जवाब न दिया हो। विद्यालय के डायरेक्टर–प्रिंसिपल संजय शर्मा एवं प्रबंधक प्रवेश कुमार ने शब्दम के प्रयास की भूरि–भूरि प्रशंशा की।

शब्दम् द्वारा शान्ति देवी आहूजा, पालीवाल इण्टर कालेज, डी.आर. पब्लिक स्कूल, नवोदय विद्यालय, इन्दिरा मैमोरियल पब्लिक स्कूल, ब्राइट स्कालर्स एकेडमी में प्रश्न मंच कराए गये।

पालीवाल इण्टर कालेज में प्रश्नमंच कार्यक्रम में भाग लेते छात्रगण।

शब्दम् का प्रश्नमंच संपन्न

शिकोहाबाद(ब्यूरो)। साहित्यिक संस्था शब्दम् द्वारा अपने प्रश्नमंच सत्र का प्रारंभ करते हुए प्रश्न मंच प्रतियोगिता सिरसागंज के जवाहर नवोदय विद्यालय में आयोजित की गयी।

कार्यक्रम का प्रारंभ शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य मंजर उल वासै और विद्यालय की प्राचार्या डा. एसएल द्विवेदी ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलन कर किया।

- जवाहर नवोदय विद्यालय में हुई स्पर्धा
- विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ लिया भाग

प्रतियोगिता में स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा पूरे उत्साह से भाग लिया गया। प्रतियोगिता के दौरान कुल 23 बच्चों को शब्दम् की तरफ से लेखनी देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डा. द्विवेदी ने कार्यक्रम के लिए शब्दम् संस्था का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से बच्चें खुश रहते हैं। कार्यक्रम का संचालन मंजर उल

प्रश्न का जवाब श्यामपट पर लिखता छात्र।

शान्ति देवी आहूजा महिला महाविद्यालय में प्रश्न का जवाब देती छात्रा।

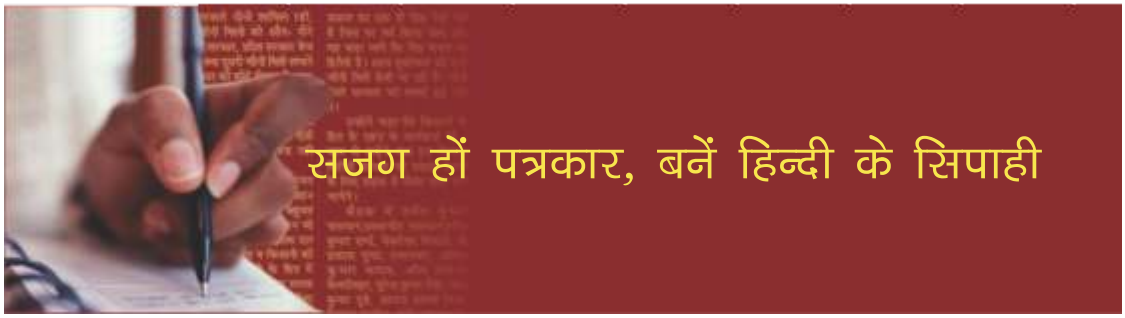

सजग हों पत्रकार, बनें हिन्दी के सिपाही

- **कार्यक्रमः** हिंदी–दिवस व स्थापना–दिवस पर पत्रकार वार्ता
- **दिनांकः** 14 सितंबर व 17 नवंबर 2011
- **आयोजकः** शब्दम्

हिन्दी के गठन की बात की जाये तो आज सबसे अधिक वह अखबारों के माध्यम से पढी जा रही है। अखबार एक ऐसा माध्यम है जो हर खासो–आम की दिनचर्या का अंग बन गया है। खबरों के अलावा अन्य कई तरह की सामग्रियों से सुसज्जित वह हर रोज अमीर–गरीब के घर में नाश्ते की शान बनता है। हिन्दी भाषा का यह एक मात्र ऐसा आयाम है जो लोगों से पूरी तरह से जुडा हुआ है। फिर क्यों न अखबारों से जुड़े लोगों को हिन्दी के प्रति सजग किया जाय। यही भाव रखते हुए इस बार के हिन्दी दिवस पर आम परंपरा से हट कर शब्दम् ने पत्रकारों के साथ एक नये प्रयोग की शुरूआत की।

सलाहकार मंडल से आये इस सुझाव को शब्दम् अध्यक्षा ने बखूबी अमली जामा पहनाया। उन्हीं की अध्यक्षता में चिन्तन भवन में हिन्दी को समर्पित पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया। पत्रकारों को भाषा के प्रति ही नहीं वरन संस्कृति और कला के प्रति भी सजग सिपाही बनने के लिए प्रेरित किया गया। शब्दम् अध्यक्षा ने कहा कि आज के पत्रकार हिन्दी का दिया हुआ ही खा रहे हैं।

अमर उजाला, के स्थानीय पत्रकार श्री दिनेश बैजल को हिन्दी शब्दकोष भेंट करते प्रो. नन्दलाल पाठक।

हिन्दी के ज्ञान ने उन्हें समाचार पत्रों में काम करने लायक स्थान दिया है। भले ही उनमें समाज की सेवा करने के लिए अनेक प्रकार के गुण हैं, लेकिन अभिव्यक्ति की प्रखरता सरस्वती की कृपा के बिना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि देश की संस्कृति को भाषा ही एक सूत्र में बांध सकती है। लेकिन विडम्बना यह है कि विदेशों में हिन्दी को सम्मान मिल रहा है जबकि इधर अपने लोगों में वह उपेक्षित हो रही है। शायराना अंदाज में इसी बात को श्रीमती

बजाज ने इन शब्दों में कहा 'फूल कांटों में खिला था, सेज पर मुरझा गया, इस घर को आग लग गयी घर के ही चिराग से'। सम्मेलन में अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, कल्पतरू एक्सप्रेस, पंजाब केसरी, राष्ट्रीय सहारा आदि समाचार पत्रों के अलावा न्यूज चैनल सहारा, डीडी–वन से जुड़े जनपद के प्रमुख पत्रकारों एवं छायाकारों ने शब्दम् की इस पहल की भरपूर सराहना दी। पत्रकारों ने आश्वासन दिया कि वे हिन्दी को सम्मान दिलाने के लिए भरसक कोशिश करेंगे।

आज हिन्दी भाषा अपने ही घर में उपेक्षा का शिकार हो रही है। विदेशों से इसी हिन्दी भाषा से लोग अच्छी चीज़ें ग्रहण कर रहे हैं। हमें समर्पित भाव से हिन्दी की सेवा करनी है। वह दिन दूर नहीं जब विश्व की सबसे सशक्त भाषा हिन्दी होगी। हिन्दी के समर्थकों को बस हिन्दी की मशाल जलाये रखनी होगी।

चिंतन भवन में हिन्दी दिवस पर आयोजित पत्रकार सम्मेलन में अपना वक्तव्य पढ़ते हुए शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने यह उद्‌गार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जब तक हिन्दी को पूरी तरह से नहीं अपनाएंगे तब तक किसी भी दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते। इस विडम्बना को तोड़ना होगा कि हिन्दी प्रदेश के निवासी होने के बावजूद हम हिन्दी बोलने में हिचकने लगे हैं। मराठी, गुजराती और दक्षिण के लोग हिन्दी मे बात नहीं करते हैं। लेकिन केवल मराठी या किसी एक प्रांत की भाषा का झंडा लेकर खड़ा होने से कोई लाभ मिलने वाला नहीं है। आज हिन्दी सिनेमा से महाराष्ट्र सहित पूरे देश में बड़ी संख्या में लोगों को रोज़गार मिला हुआ है। लंबी चौड़ी टीआरपी बटोरने वाले कई चैनल भी हिन्दी का किया धरा ही खा रहे हैं। आज हमें विदेशी भाषा अपनाने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन देश की भाषा बोलने में हम दिक्कत महसूस करने लगे हैं। देश की संसद में भी हिन्दी अनिवार्य होनी चाहिए। हिन्दी व इसके अंतर्गत पढ़ाये जाने वाले विषयों का ज्ञान विद्यार्थियों में भरना जरूरी है। उसके प्रति प्रेम और श्रद्धा भी पैदा करनी होगी। किसी दूसरी भाषा को सीखना बुरा नहीं है, लेकिन भरोसा तो अपनी भाषा और अपने ज्ञान पर ही किया जा सकता है। यदि अपनी भाषा को सम्मान और गौरव हम नहीं दिला सके तो भला कौन दिलायेगा।

उपस्थित पत्रकार बन्धु।

जनपदीय चिन्तन एवं विचार गोष्ठी

- **कार्यक्रमः** जनपदीय चिन्तन एवं विचार गोष्ठी
- **दिनांकः** 14 नवम्बर 2011
- **आयोजकः** शब्दम्
- **आमंत्रितः** शिकोहाबाद की समाजसेवी संस्थाएं

शब्दम् स्थापना दिवस के अवसर पर शब्दम् द्वारा अपने क्रियाकलापों को विस्तार देने के उद्देश्य से शिकोहाबाद में संचालित अन्य स्वंयसेवी संगठनों, अवकाश–प्राप्त प्राचार्य एवं बुद्धिजीवियों की बैठक आहूत की गयी।

अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए संस्था अध्यक्ष ने कहा कि साहित्य–संगीत–कला हमारी संस्कृति के अमूल्य अंग हैं। इसके संरक्षण एवं विकास के लिए जिससे जहॉ भी उचित हो सके सहयोग करना चाहिए।

श्री अनिल बेधड़क एवं प्रशान्त उपाध्याय ने शब्दम् द्वारा आयोजित प्रश्न मंच कार्यक्रम को फिरोजाबाद एवं टूण्डला में आयोजित करने हेतु सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री ओमप्रकाश बेवरिया ने कहा कि शब्दम् द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों में मैं अपना पूर्ण सहयोग व समय दूंगा। इनके अतिरिक्त जिनके सहयोग का आश्वासन मिला, वे हैं:

वाद–विवाद प्रतियोगिता में आयोजित करने के लिए कृपाशंकर शर्मा, अशोक कुमार

भाषण प्रतियोगिताः समसामयिक विषयों पर, अशोक कुमार

निबन्ध लेखन प्रतियोगिताः कृपाशंकर शर्मा ,ए.एम. खान

गायन प्रतियोगिताः कप्तान सिंह संघर्षी, निर्दोष कुमार प्रेमी

वाग्देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर गोष्ठी का शुभारम्भ करती श्रीमती किरण बजाज साथ सलाहकार समिति सदस्य डा. महेश आलोक।

गोष्ठी में उपस्थिति शिकोहाबाद के गणमान्य व्यक्ति व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि।

‘मानव हो कर भी अछूत हूं, यह कोई ईमान नहीं है’

- **कार्यक्रम विषयः** स्थापना दिवस समारोह
- **दिनांकः** 17 नवम्बर 2011
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित साहित्यकारः** प्रो. नन्दलाल पाठक व डॉ. मक्खनलाल पाराशर

शब्दम ने अपना सातवां स्थापना दिवस उल्लास और विचार विमर्श के साथ मनाया। इस अवसर पर जहां एक तरफ साहित्य, कला और संगीत की गतिविधियों को नये आयाम प्रदान करने के लिये विभिन्न अभिरुचियों के लोगों को जोड़ने की दिशा में एक कदम आगे बढाया गया वहीं दूसरी ओर प्रख्यात साहित्यकार शब्दम न्यासी मंडल के श्री नन्दलाल पाठक का अभिनंदन करते हुए हिन्दी ग़ज़ल पर चर्चा और काव्यपाठ का आयोजन किया गया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री नन्दलाल पाठक ने ग़ज़ल के स्वरूप और स्वभाव पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज कल हिन्दी कविता में ग़ज़ल का युग चल रहा है। लेकिन कुछ लोग ग़ज़ल को पराया धन की तरह से अस्वीकृत कर देते हैं। लेकिन आज के दौर में कविता के लिये जो कुछ जरूरी है वह गजल में मौजूद है। इसलिये ग़ज़ल को हिन्दी कविता का अंग नहीं मानने का कोई कारण नहीं है। हिन्दी भाषा अब विश्व के सबसे विराट जनतंत्र की भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में विकसित हो रही है। उसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट पहचान है। हिन्दी के इस विकास में

.प्रो. नन्दलाल पाठक को सम्मानित करते बजाज इलेक्ट्रिकल्स के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक शेखर बजाज।

उसकी सर्वग्राह्ता के गुण ने मजबूत आधार का काम किया है।

श्री पाठक ने कहा कि कविता का काम है मन को रागात्मक तृप्ति देना। आजकल पनप रही अनेक प्रकार की कविता ठीक तरह से अपना काम नहीं कर पा रही है। इसलिये ग़ज़ल की मांग बढी है। ग़ज़ल का रूप–विधान मुक्तक के भीतर मुक्तक है। दूसरी ओर जब गीत मुक्तक न रह कर विस्तार में प्रबंधात्मक हो गया तो ग़ज़ल ने उसकी जगह ले ली है। लेकिन ग़ज़ल में कौशल का बड़ा महत्व है। हिन्दी में ग़ज़ल खुसरो से लेकर कबीर तक और प्रसाद से लेकर निराला तक उपस्थित दिखाई देती है।

ग़ज़ल पर चर्चा के बाद श्री पाठक ने अपनी नयी पुरानी ग़ज़लें सुना कर समां बांधा। ''जो जमीनी हो वह कहानी दो, फिर भले स्वप्न आसमानी दो। यह जो सदियों से रुका है पानी, दे सको तो उसे रवानी दो'', ''सर आसमान पर है नमन छूट गया है, नजरों में है प्रसाद हवन छूट गया है'' जैसी ग़ज़लों से उन्होंने नियति और मानवीय 'व्यवहारों' पर तंज कसा तो दूसरी तरफ ''उदारता का यह उठा तूफान रहने दो, मुझे दो फल मेरी मेहनत का, दान रहने दो'' जैसी पंक्तियों में उन्होंने अपने स्वाभिमान की झलक भी दी। ग़ज़ल के अलावा गीत की सरस धारा का प्रवाह भी उन्होंने पूरे मन के साथ प्रेषित किया। ''किसी को कुछ न दे, किसी को दे तो बेहिसाब दे, ये किसका इन्तज़ाम है, मुझे कोई जवाब दे'', ''मेरे सीने में जो दिल है, क्या उस दिल में जान नहीं है , मानव हो कर भी अछूत हूं–यह कोई ईमान नहीं है'' जैसे गीतों ने लोगों को सोचने पर विवश कर दिया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे जनपद के वरिष्ठ साहित्यकार श्री मक्खनलाल पाराशर ने शब्दम की यात्रा को अर्थपूर्ण बताया। काव्यपाठ के क्रम में उन्होंने अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। स्वागत भाषण में शब्दम अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने

बायें से जनार्दन पाठक, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, शेखर बजाज, किरण बजाज, प्रो नन्दलाल पाठक, डा मक्खलाल पाराशर, राम सिंह शर्मा, डा.महेश आलोक, डा. ओ.पी. सिंह, मुकेश मणिकान्चन एवं गुप्ता जी।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते डा. मक्खनलाल पाराशर।

कहा कि शब्दम के लिये काम करने वाले, भावना रखने वाले और शुभकामनाएं प्रेषित करने वाले सभी का इस असवर पर मैं स्वागत करती हूं। पावर प्वाइंट के माध्यम से उन्होंने शब्दम की वर्ष की गतिविधियों को रखा।

इस गरिमामयी समारोह का गवाह बना हिन्द लैम्प्स परिसर का नये कलेवर वाला संस्कृति भवन। बजाज इलैक्ट्रीकल्स के सीएमडी श्री शेखर बजाज की आद्योपांत उपस्थिति ने समारोह को और भी भव्यता प्रदान की। सलाहकार मंडल के डा. महेश आलोक ने समारोह का सफल संचालन किया। डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुकेश मणिकांचन ने मुख्य अतिथि श्री नन्दलाल पाठक का परिचय प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण प्रस्तुत करने के बाद श्री शेखर बजाज और किरण बजाज ने नन्दलाल पाठक एवं मक्खनलाल पराशर का स्वागत–अभिनंदन किया। डा. ओ. पी. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

''मेरा रीता मधुघट भर दो''

मेरा रीता मधुघट भर दो।
कण–कण मेरा चिन्मय कर दो,
कड़वे घूँट पिये हैं मैंने,
नीरस दिवस जिये हैं मैंने,
जहाँ मुखुरता आवश्यक थी,
बरबस अधर सिये हैं, मैंने
मैं अनबजी बाँसुरी, बादक।
उसके छिद्रों में नवस्वर दो,
कण–कण मेरा चिनमय कर दो।

चलने को सन्नद्ध रहा हूँ
फिर भी सीमाबद्ध रहा हूँ,
उड़ने की अभिलाष सँजोए,
पग–पग पर अवरूद्ध रहा हूँ,
पिंजरबद्ध विहग को गतिमय,
मुक्त, अन्न नील अम्बर दो,
मेरा रीता मधुघट भर दो।

रस भर दो, इतना बरसाऊँ,
अब–जग सब रसमय कर जाऊँ,
कोई रहे न रीति–प्यासा
हर गागर को भरता जाऊँ,
चलने से पहले इस घट को
मधुमय, रसमय, छिन्नमय कर दो,
मेरा रीता मधुघट भर दो।

– मक्खन लाल पाराशर

नहाये - धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय।।

– कबीर

प्रो. नन्दलाल पाठक की ग़ज़ल

ज़िंदगी भर साथ कुछ मजबूरियाँ चलती रहीं
उत्सवों के भीड़ में वीरानियाँ चलती रहीं।

हमसफ़र होकर भी हम बिलकुल अपरिचित ही रहे
साथ ही नज़दीकियों के दूरियाँ चलती रहीं।

भर गए थे घाव लेकिन दाग़ रोशन थे अभी
थम गए थे अश्रु फिर भी सिसकियाँ चलती रही।

कहकहों का दौर ऐसा था कि मैं भी हँस पड़ा,
दिल की दुनिया में मगर खामोशियाँ चलती रहीं।

रुक गया मैं साँस लेने को चढ़ाई देखकर
चींटियों को देखता हूँ चींटियाँ चलती रहीं।

ज़िंदगी का अर्थ है पक्के इरादों का सफर
कट गए जब पाँव तब बैसाखियाँ चलती रहीं।

रोटियों की खोज में थककर भिखारी सो गया,
स्वप्न में भी चाँद जैसी रोटियाँ चलती रहीं।

कल करिश्मा था जो अब है खेल बाएँ हाथ का,
सीढ़ियों पर मैं खड़ा था सीढ़ियाँ चलती रहीं।

धर्म से है प्रेम जिनको प्रेम उनका धर्म है,
ज़ाहिलों के बीच भाले बर्छियाँ चलती रहीं।

मैं समझता था प्रगति की राह पर हूँ चल रहा
किन्तु मेरे पाँव पकड़े रूढ़ियाँ चलती रहीं।

कोशिशें की लाख तुमसे दूर जा पाया न मैं
दूर जाने की महज तैयारियाँ चलती रहीं।

प्रो. नन्दलाल पाठक गज़ल प्रस्तुत करते हुये।

महानायक कृष्ण के विविध रूपों का नाट्य रूपांतरण

- **कार्यक्रमः** नृत्य नाटिका 'कृष्ण'
- **दिनांकः** 20 दिसम्बर 2011
- **संयोजनः** 'शब्दम' तथा श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट
- **स्थानः** गांधी चौक, वर्धा

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर तथा साहित्य संगीत कला को समर्पित संस्था शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में कृष्ण के विविध रूपों की संगीतमय नृत्य नाटिका का मंचन गांधी चौक में आयोजित किया गया था।

श्रीराम कला केंद्र द्वारा प्रस्तुत कृष्ण पर यह नृत्य नाटिका भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक जकड़न को तोड़ने का अप्रतिम उदाहरण है। पश्चिम की आंधी में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूल रहे समाज के लिए श्रीराम कला केंद्र दिल्ली द्वारा प्रस्तुत कृष्ण नाटिका की प्रस्तुति इस अर्थ में महत्वपूर्ण रही कि इसमें भारतीय संस्कृति के महानायक कृष्ण के दोनों रूपों, माखनचोर तथा महाभारत के कृष्ण को प्रभावी ढंग से रूपांतरित किया गया। लोक प्रचलित से लेकर गुरु गंभीर व्याख्या तक तथा नाटक के उत्तरार्ध में युद्ध में चक्रधारी कृष्ण की भूमिका पर इस नाटिका में अधिक जोर दिया गया।

इस अवसर पर बजाज इलेक्ट्रिकल्स के प्रबंध निदेशक श्री शेखर बजाज ने कहा कि गत चार वर्षों से लक्ष्मीनारायण मंदिर, बजाज परिवार तथा शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में धार्मिक कार्यक्रमों

राधा के संग रास रचाते भगवान कृष्ण।

का आयोजन किया जा रहा है, लक्ष्मीनारायण मंदिर को 103 वर्ष पूर्ण हो गए हैं, आज के इस शुभ अवसर पर जमनालालजी बजाज के राजस्थान परिवार के सदस्य आये हुए हैं।

श्री शेखर बजाज ने कृष्ण का अभिनय करने वाले राजकुमार शर्मा, भीष्म का अभिनय करने वाले उपेंद्र कुमार सिंह, राधा के रूप में आकांक्षा तथा समूह प्रमुख श्री मनोजीत बसाक का शाल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया ।

भगवान कृष्ण कालिया नाग का मर्दन करते हुए।

न्यूज़ीलैंड में टैगोर का जन्मदिन

''आपके हृदय में कैद आज़ादी आपके ख्वाबों में मुक्त हो सकती है'' – रवींद्रनाथ टैगोर

शब्दम ने पिछले साल न्यूज़ीलैंड में एक अनोखे कार्यक्रम को सह प्रायोजित किया. न्यूज़ीलैंड के विशाल दर्शक समूह के लिए बेहतरीन भारतीय नाटक पेश करने वाले 'प्रयास' सांस्कृतिक दल ने, जो कि एक सक्रिय थिएटर ग्रुप है, रवींद्रनाथ टैगोर का नाटक 'किंगडम ऑफ काड्र्स' (ताशेर देश) प्रस्तुत किया। यह न्यूज़ीलैंड के दर्शकों को भारतीय संस्कृति और नाटक के श्रेष्ठरूप से अंग्रेजी में रूबरू कराने का प्रयत्न था।

शब्दम् के सहयोग से 'किंगडम ऑफ काड्र्स' का मंचन 24-27 नवंबर 2011 को न्यूज़ीलैंड के ऑकलैंड स्थित 'द परफॉर्मिंग आट्र्स सेंटर' में किया गया। वर्ष 2011 में इसके नाटककार, नोबल पुरस्कार विजेता विलक्षण प्रतिभा के धनी रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) की 150 वीं सालगिरह मनाई गई।

नाटक के हास्य और व्यंग्य को न्यूज़ीलैंड की आधुनिक जीवनशैली में तुरंत मान्यता मिल गई। लगभग सभी प्रदर्शन दर्शकों से खचाखच भरे रहे और दर्शकों ने इस महान रचना के माध्यम से टैगोर द्वारा दिए गए सार्वजनिक संदेश की सराहना की।

'किंगडम ऑफ काड्र्स' संगीत एवं नृत्य की रंगारंग कॉमेडी में एक राजकुमार की कहानी है जो आलीशन लेकिन नीरस जीवन के बोझ से छुटकारा पाना चाहता

है। इसलिए वह अनजानी जगहों के जोखिम उठाने और चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने एक व्यापारी दोस्त के साथ नौका पर निकल पड़ता है। 'हमारी शांति और सुकून एक प्राचीन वृक्ष जैसे हैं जिसमें कीड़ों ने घर बना लिया है और वह मर चुका है; हम इसे गिरा देना चाहते हैं'।

'एलिस इन वंडरलैंड' की शैली में, वह बचपन जैसी दुनिया में पहुँच जाता है जहाँ पर सब कुछ ताश के चरित्रों के समान है। लोग अस्वाभाविक जीवन जीते हैं और 'नियमों' एवं ताश की वंशावली द्वारा निर्देशित हैं। नाटक में दिखाया गया है कि किस तरह राजकुमार उस दुनिया को बदलता है और उनके जीवन में प्रेम, संगीत एवं गतिविधियों की खूबसूरती लाता है।

टैगोर ने बड़ी होशियारी से जाति, वर्ग और अर्थहीन नियमों एवं कानूनों की आलोचना की है। ''तुम महिला हो – तुम्हें शांति की रक्षा करनी चाहिए. हम पुरुष हैं, और हमें संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए।''

'किंगडम ऑफ काड्र्स' के प्रस्तुतिकरण में, 'प्रयास' ऑकलैंड थिएटर समुदाय तक सफलतापूर्वक पहुँच गया और इसमें कई अलग अलग जातीयता के कलाकारों और लोगों ने काम किया।

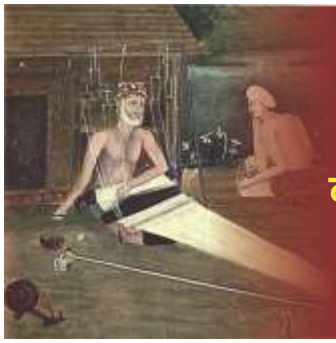

कबिरा खड़ा बाज़ार में, सबकी मांगे खैर...

कबीर महोत्सव मुंबई 2012 का आयोजन 17 फरवरी से 19 फरवरी, 2012 को हुआ। इस महोत्सव का उद्देश्य लोगों को कबीर एवं ऐसे अन्य भक्ति/सूफी कवियों के संदेश से परिचित/स्मरण करवाना था, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वे अपने समय में थे।

विचारोत्तेजक फिल्में, जीवंत कथा कथन सत्र, भारत के विभिन्न हिस्सों के ओजपूर्ण लोक संगीत और अकथ कहानी –(कहानी, गीत और नृत्य की एक प्रस्तुति) साहस, समता, धर्मनिरपेक्षता, शांति और सभी के लिए आंतरिक खोज का संदेश देते हुए लोक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला नि:शुल्क लोगों तक पंहुचाई गई।

मुंबई के विभिन्न हिस्सों में 12 कार्यक्रम स्थलों पर 15 विभिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए। मुंबई के सांस्कृतिक स्थलों से दूर रहने वाले दर्शकों और श्रोताओं तक इस महोत्सव को ले जाने के लिए इन कार्यक्रमों का आयोजन विद्याविहार, बोरीवली और वाशी में हुआ।

इस महोत्सव की शक्ति विभिन्न संगठनों के सहयोग और सामुदायिक भाव में निहित थी, जिससे साझेदारी की भावना प्रकट हुई। लोगों ने इस महोत्सव में अपनेपन की

प्रह्लादजी द्वारा बांद्रा में प्रस्तुति।

भावना के साथ अपने घर, वाहन, समय, प्रतिभा और धन को साझा किया, जिससे टीम के सदस्यों में ज़बर्दस्त ऊर्जा एवं सौहार्द का संचार हुआ।

शब्दम जैसे संगठन (जो हमारी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत के संरक्षण के लिए हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करने हेतु कार्यरत है) इस महोत्सव की सह–प्रायोजकता के लिए आगे आए और कबीर महोत्सव के अंतर्गत वर्षभर चलनेवाले कार्यक्रमों में इसकी भागीदारिता का प्रस्ताव भी दिया।

कबीर दोहों का वाचन।

अलसुबह कार्टर रोड बांद्रा में कार्यक्रम का आनंद।

शबनम विरमानी का गायन– चव्हाण सभागार में।

ज्ञानसागर एम्फीथिएटर में मूरालाला मारवाड़ा का गायन।

मुख्तियार अली का गायन।

किताबखाना में अकथ कहानी की प्रस्तुति।

सम्मान समाचार

शब्दम् संस्था के सलाहकार मण्डल के सदस्यों का सम्मान

शब्दम् के उपाध्यक्ष प्रो. नन्दलाल पाठक को इस वर्ष दो पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। पहला है ठाणे (महाराष्ट्र) द्वारा 'डॉ. हरिवंशराय बच्चन पुरस्कार' तथा दूसरा साहित्य शोध संस्थान द्वारा 'साहित्यरत्न पुरस्कार'।

राम कथा के मार्मिक प्रसंगों को अभिनव अभिव्यक्ति के साथ आधुनिक सन्दर्भ प्रदत्त करने के लिए यह सम्मान हर साल दिया जाता है। मानस मंच ने इस बार प्रख्यात कवि एवं मनीषी डॉ ध्रुवेन्द्र को सम्मानित किया।

शब्दम् संस्था अध्यक्ष का सम्मान

"नारी को आगे बढ़ाना है तो उसके बढ़ते हुए पगों को प्रोत्साहन देना होगा। बदलते वक्त में नारी सशक्त हो रही है लेकिन, एक कड़वा सच यह भी है कि आज भी तमाम क्षेत्रों में नारी स्वतंत्र नहीं है।

मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर "दैनिक जागरण" ने जुदा–जुदा क्षेत्रों में बढ़ते पगों से नए आयाम रचने वाली महिलाओं का उनके घर जा कर सम्मान किया तो अपने क्षेत्र में विशेष योगदान करने वाली इन महिलाओं के हौसलों में पंख लग गये। इस क्रम में पर्यावरण एवं साहित्य के क्षेत्र में कार्य कर रही उद्यमशील किरण बजाज का उनके शिकोहाबाद हिन्दलैप्स स्थित निवास पर दैनिक जागरण के ब्यूरो चीफ शैलेंद्र गुप्त शैली एवं शिकोहाबाद के प्रतिनिधि राजेश द्विवेदी ने जागरण परिवार की ओर से सम्मान किया"।

–दैनिक जागरण

जो मनुष्य हमेशा अमृत पीता है, उसे अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि जहर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूंदें।

- महात्मा गांधी

अतीत के पन्नों से

ब्रज विभूति पं० भोजराज चतुर्वेदी 'मानव'
जन्म–21 फरवरी, 1921 फतेहपुर कर्खा (शिकोहाबाद)
निधन–27 नवम्बर 1985

जीविका हेतु मई 1955 से फरवरी 1982 तक हिन्द लैम्प्स लि0 शिकोहाबाद में कार्यरत रहे पं0 भोजराज चतुर्वेदी प्रमुख एवं सिद्धहस्त छायावादी गीतकार थे, जिन्होंने जयशंकर प्रसाद के बाद छायावाद की कड़ी को सार्थकता के साथ आगे बढ़ाया। चतुर्वेदीजी की कविता और गीतों में मुख्यतः व्यथा और विद्रोह के स्वर मुखरित हुए हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन के कटु यथार्थ को उभारा और सामाजिक चेतना जाग्रत की।

कानपुर में अध्ययन करते हुए आचार्य सदगुरू शरण अवस्थी के सान्निध्य में उनके अन्दर कविता के भाव प्रस्फुटित हुए और उन्होंने अवस्थीजी को साहित्यिक गुरू के रूप में स्वीकार किया।

प्रकाशन–अपने समय की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं माधुरी, झंकार, वीर अर्जुन, रामराज्य, सरस्वती में अनेक रचनाएँ प्रकाशित।

गीतों के देवता नमन, वनवासी के गीत, शिला और लहरें आदि काव्य कृतियाँ प्रकाशित एवं अभिमानी, जीवन सन्ध्या, यायावर काव्य कृतियाँ व अनेक फुटकर गीत अप्रकाशित। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से निरन्तर काव्य पाठ।

सम्मान– अनेक संस्थाओं द्वारा समय–समय पर सम्मानित। 15 फरवरी 1985 को अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम, आगरा की ओर से ''ब्रज विभूति'' अलंकरण से सम्मानित।

भोजराज चतुर्वेदी "मानव" की चयनित रचनायें

उपलब्धियां

प्रतिमायें अंग भंग मन्दिर गर्वीले
धुंआ भरे कक्ष मिले वातायन गीले
कुहरा दुहराया इन बहुरूपी बिम्बों ने,
मायाविनि किरणों ने दर्पण सब कीले।
प्रतिमायें अंग भंग मन्दिर गर्वीले।

पारस के रूप–नाम काँच के खिलौने,
शब्दों में शेष नाग अर्थों में बौने,
पूनम को पिये अमा स्यंदन में सोए,
घूमकेतु हाँक रहे घायल मृग छौने।
कब तक दो स्वास चलें, छल पर विश्वास पलें,
छिले छिले कोमल पद,
पथ भी पथरीले।
प्रतिमायें अंग भंग, मन्दिर गर्वीले।

निर्वासित सत्य शिवं ; सुन्दर ठुकराया,
पश्चिम के चिन्तन, बस पूरब का काया।
वृन्तों ने विसरादी पंखुरी गुलाबी,
कांपते कपोतों पर श्येनों की छाया।
सुधा पात्र खोज रहे युग धर्मी नीलकंठ,
ओठों को सीले या निष्ठी विष पीले।
प्रतिमायें अंग भंग, मन्दिर गर्वीले।

हंसों के गंध–सुमन, गरुड़ों की लाली,
चीलों की भेंट हुई पूजा की थाली,
दीपक के भाल लिखी तम की परिचर्चा,
स्वर्णिम आधारों पर रचनायें काली।
नियति की विडम्बना कि क्षुधाग्रस्त सीपों ने,
निगले सब होनहार मोती चमकीले
प्रतिमायें अंग भंग, मन्दिर गर्वीले।

दिया कर्मनाशा ने ऐसा कुछ नारा,
गोमुख तक पहुँच गयी कल्मष की धारा।
भागीरथ युग के प्रतिमान सब डूबे,
पर्वत आदर्शों के खोजते सहारा!
सेतुभंग कूलों का संशयी पराया धन,
चितवन बर्फीली, सम्बोधन रेतीले।
प्रतिमायें अंग भंग, मन्दिर गर्वीले।

मेरी आयु न तुम वर्षों से आंकों

मेरे निर्माणों की दुर्गति पूछो तुम अपने नाशों से,
इन गीतों की जमी व्यथा को मापो अपने उल्लासों से!

उत्कर्षों से नहीं, साधना मेरी संघर्षों से आंको,
अनुभक्तों कल्पों का,
मेरी आयु न तुम वर्षों से आंको

परिणामों से नहीं साधना का बल पूछो विश्वासों से!
गीतों की यह कैसी थाती सौंप गये थे जाते जाते,
युगयुगापथ आंसू से धोया, नयन थके, तुम किन्तु न आते,
भौतिक दूरी का विस्तृत पथ, कब तक नापूं दो श्वासों से!

सपनों की संकुचित परिधि को तुम कितना विस्तार दे गये,
आंसू वन्दनवार विभूषित सदा मुक्त दृग–द्वार दे गए,
मरू के प्रकरण सुनों किरण से, या बाड़व के इतिहासों से!

सूनेपन की गूंज स्वयं ही तारों के निश्वास कहेंगे,
कोकिल के सकरुण मिठास को,
लघुजीवी मधुमास कहेंगे,
परवशता की पीड़ा क्या है, पूछो इन अगणित पासों से!
मेरे निर्माणों की दुर्गति पूछो तुम अपने नाशों से!

अन्यान्य

भाषाओं का भाईचारा

आक्सफोर्ड के कुनबे में शामिल हो रही है हिन्दी

भाषाएं एक दूसरे के शब्दों को हजम करने का गुण रखती हैं। हिन्दी इस मामले में अधिक तेज कही जाती है लेकिन अंग्रेजी सहित अन्य भाषाएं भी बाहर के शब्दों को अपना कर कुनबे में शामिल कर लेती हैं। विश्व की प्रतिष्ठित आक्सफोर्ड डिक्शनरी के ताजा अंक ने इसे सिद्ध किया है। अंग्रेजी शब्दकोश के इस अंक में हिन्दी के तमाम शब्दों को स्थान दिया गया है। अलग प्रकार के नजरिये से इसे भाषाओं का आपसी भाईचारा कहा जा सकता है। मजेदार बात तो यह है कि हिन्दी से अंग्रेजी में स्थान पाने वाले कई शब्द तो ऐसे हैं जो असल में मूल रूप से हिन्दी के अपने भी नहीं हैं। वे अन्य भाषाओं से हिन्दी में आये थे। लेकिन अंग्रेजी में जाने से पहले उन शब्दों ने हिन्दी में अपनी पहचान बना ली थी।

– प्रशांत उपाध्याय

सम्मति

'शब्दम' अपने प्रयास को सार्थक करती है। पत्रिका का कागज, छपाई उत्कृष्ट है। युवा पीढ़ी को भाषा संस्कृति से रूबरू कराने का प्रयास सराहनीय है। ट्रस्ट परिवार 'शब्दम' के उत्तरोत्तर सफलता की कामना करता है।

डॉ. बलदेव सिंह
मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक
नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

आक्सफोर्ड में भी घुस गया 'चमचा'

गोरखपुर। किसी को चमचा कहिए तो उसकी इज्जत घट जायेगी। लेकिन अब यही चमचा आक्सफोर्ड डिक्शनरी में प्रतिष्ठा पा चुका है। अंग्रेजी की डिक्शनरी के एकदम नये 11वें संस्करण में 'चमचा' को हूबहू अंग्रेजी शब्द के रूप में स्थान मिला हुआ है। इस अंक में बदमाश, हवाला, बंद, ढाबा और बिंदास सरीखे कई हिन्दी शब्दों को उसमें स्थान मिला है।

बेहद प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के नये संस्करण में करीब 3.55 लाख शब्द हैं, जिनमें सात सौ के आसपास भारतीय भाषाओं के शब्द हैं। इनमें अधिकतर शब्द व्याकरण और भाषा विज्ञान की कसौटी के हैं। लेकिन 'चमचा' जैसे कई शब्द ऐसे हैं, जो लोकजीवन से निकले हैं। इन भाब्दों को एक छोटे से इलाके के लोगों ने गढ़ा है। बाद में बोलचाल में इतने आम हो गये, लिखने पढ़ने में भी इस्तेमाल होने लगे। नये संस्करण में धर्म से जुड़े कई शब्द – योग, मंत्र, गुरू, पंडित, कर्म, धर्म, निर्वाण भी अपनी जगह बना चुके हैं। पारसी के शब्द 'पायजामा' को भी अंग्रजी में पहले ही स्वीकार किया जा चुका है। जबकि भक्ति, नमस्ते, चाय, आश्रम व लूट ने भी आक्सफोर्ड डिक्शनरी में अपनी पहचान कायम कर ली है।

–अमर उजाला 16 दिसंबर 2011

गत वर्ष शब्दम द्वारा मुंबई विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी–विभागाध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध मराठी साहित्यकार श्री चंद्रकांत बांदिवडेकर का सम्मान किया था। उसी संदर्भ में श्री बांदिवडेकर के लिखे पत्र का अंश :

परम आदरणीया किरण बजाज,

स्नेहपूर्वक नमस्कार,

कुछ विलंब से पत्र लिख रहा हूँ । असल में 'शब्दम्' की ओर से आयोजित मेरे गौरव–सम्मान का समूचा प्रसंग मेरे जीवन की एक विशेष उपलब्धि है। मुझे पुरस्कार खूब मिले परंतु 'शब्दम्' का पुरस्कार मेरे लिए अतीव हर्ष और सम्मान का प्रसंग रहा। जीवन में कुछ प्रसंग जीवन को सार्थकतापूर्वक जीने का सम्मान प्रदान करते हैं – शब्दम् का पूरा आयोजन मेरे लिए ऐसा ही महत्त्वपूर्ण रहा ।

ऊपर लिखे शब्दों में आंतरिक ईमानदारी है जिसका प्रमाण मेरी पत्नी लीला दे सकती है ।

'शब्दम्' के अंक मिले–बहुत अच्छे लगे ।

चंद्रकांत बांदिवडेकर

'पढ़ो उर्दू ग़ज़ल लिखो हिंदी में'

साहित्यिक पत्रिका 'युगीन काव्या' द्वारा कालीना, मुंबई में आयोजित तथा शब्दम द्वारा प्रायोजित 'हिंदी ग़ज़ल गोष्ठी' में वरिष्ठ रचनाकार प्रो. नन्दलाल पाठक ने कहा कि ''उर्दू ग़ज़ल नहीं होती तो हिंदी ग़ज़ल नहीं होती। खड़ी बोली की दो बेटियां है – उर्दू और हिंदी। उर्दू का रोमांस फारसी और हिंदी का संस्कृत से हुआ। उन्होंने सलाह दी कि उर्दू ग़ज़ल खूब पढ़ो, मगर लिखो हिंदी में। उसमें तुम्हारा व्याकरण और हिंदी होनी चाहिए। उर्दू के सारे शब्द ले लो, बस, अरबी–फारसी का व्याकरण मत लो।'' मुख्य अतिथि के रूप में गाजियाबाद से आए वरिष्ठ शायर कमलेश भट्ट 'कमल' ने कहा, 'हिंदी–उर्दू के रिश्ते जनम–जनम के हैं, उसे कोई अलग नहीं कर सकता।' उर्दू के वरिष्ठ शायर ताजदार ताज, वरिष्ठ पत्रकार प्रेम शुक्ल, मुंबई विंवि के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रतन कुमार पाण्डेय और 'युगीन काव्या' के संपादक हस्तीमल हस्ती ने विचार व्यक्त किए। इसके बाद डॉ. अनंत श्रीमाली के संचालन में 'हिंदी–उर्दू काव्य–ग़ज़ल पाठ हुआ।

– नवभारत टाइम्स
१७.१२.२०११

स्नेह मिलन समारोह

हिन्द परिसर स्थित संचालित नारी शक्ति सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी पूर्व छात्राओं को उनके अनुभव बांटने के उद्देश्य से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने छात्राओं को स्वावलम्बी बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि नारी अपनी शक्ति को पहचाने एवं अपने हुनर एवं कौशल को विकसित कर स्वयं को स्वावलम्बी बनाए एवं गाँव–समाज को सशक्त करें।

मंचासीन बायें से नारी शक्ति केन्द्र अध्यक्ष सुषमा मिश्रा, किरण बजाज, माया शर्मा।

शब्दम् अध्यक्ष के विचारों का श्रवण करती पूर्व छात्राएं नारी शक्ति केन्द्र।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

शब्दम् अध्यक्ष का संदेश : हकीकत यह है कि हमारे देश की जनसंख्या का आधा हिस्सा महिलाएं हैं, जिन्हें भारतीय संविधान की ओर से समान अधिकार दिए गए हैं, लेकिन मुझे यह कहते हुए बड़ा दुख होता है कि केवल कुछ कामयाब महिलाओं को छोड़कर बाकी और सभी महिलाओं में अपने अधिकारों को लेकर कोई जागरूकता नहीं है. बालिकाओं के माता–पिता हमेशा उसकी शादी को लेकर चिंतित होते हैं, पर उन्हें उसके स्वस्थ पोषण और अच्छी शिक्षा की चिंता नहीं होती। यह शर्म की बात है कि दूसरे देशों के मुकाबले हमारे देश में महिलाओं का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण बड़े पैमाने पर होता है। आज भी दहेज और बाल विवाह जैसी बुराईयां विद्यमान हैं।

अब वो समय आ गया है, जब महिलाएं अन्याय के खिलाफ जंग छेड़ें और मां दुर्गा जैसी देवियों से शक्ति ग्रहण करें, वे सरस्वती की तरह ज्ञान की देवी बनें और हीनता के विरुद्ध लक्ष्मी की तरह लड़ें। इसके बाद ही हमारा देश समृद्धि की राह पर आगे बढ़सकेगा।

अमर उजाला

अन्याय से लड़ने के लिए दुर्गा बनना होगा

अधिकारों से वंचित हैं देश की महिलाएं : किरण

अमर उजाला ब्यूरो

'नारी की दशा के लिए परिवार जिम्मेदार'

'कहां पहुंची है भारत की नारी' विषय पर गोष्ठी

महिलाओं से बुरा बर्ताव क्यों

शिकोहाबाद। हर चार घंटे में देश में एक महिला की दहेज के कारण हत्या कर दी जाती है। हर दो घंटे में किसी न किसी महिला के साथ बलात्कार की घटना होती है। गर्भपात के दौरान देश में हर साल अस्सी हजार महिलाओं की मौत हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर यह आंकड़े पेश करते हुए उद्यमी व समाजसेवी किरन बजाज ने भारत में महिलाओं की स्थिति को दयनीय बताया।

आजादी के बाद कहां पहुंची भारत की नारी विषय पर आयोजित परिचर्चा के बाद पत्रकारों से बातचीत में किरन बजाज ने महिलाओं की दुर्दशा के लिये सबसे अधिक परिवार की स्थितियों को जिम्मेदार ठहराया। कहा कि आज भी अधिकांश परिवारों में महिलाओं को दोयम दर्जे पर रखा जाता है। बाल विवाह, घरेलू अत्याचार और कुपोषण जैसी परेशानियों से नारी को पूरी तरह से मुक्ति नहीं मिली है। गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित और स्वयं सेवी संगठन संचालित करने वाली श्रीमती बजाज ने कहा कि देश के कई बड़े पदों पर आज महिलाएं आसीन हैं। कारपोरेट, खेल और फिल्म जैसे क्षेत्रों में महिलाओं ने सफलता का लोहा मनवाया है लेकिन यह देश की असली तस्वीर का एक छोटा सा हिस्सा है। तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि देश में आज भी बड़े पैमाने पर महिलाओं के साथ बुरा बर्ताव हो रहा है। इसके लिये पिता, भाई और पति जिम्मेदार हैं। नारी का यौन शोषण तो गुड्डे गुड़ियों का खेल हो गया है। परेशानी इस बात की है कि देश की संवैधानिक व्यवस्था के आधार पर बलात्कारियों को सजा भी मिलना मुश्किल है। उन्होंने अपील की कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी बुद्धिजीवियों और नारीवादियों को संकल्प लेना चाहिये कि एक मंच पर आकर नारी की दशा और दिशा को भारत की प्राचीन परंपराओं के अनुसार समृद्ध करें।

नेताजी ने हिन्दी अनुवाद किया

जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उस समय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक दिल्ली में हो रही थी। श्री विश्वनाथदास, जो उन दिनों उड़ीसा के मुख्यमंत्री थे, अन्य मुख्यमंत्रियों के साथ इस बैठक में आमंत्रित थे। जब विश्वनाथ बाबू की इस बैठक में बोलने की बारी आई तो उन्होंने अंग्रेजी में बोलना प्रारम्भ किया। गांधीजी सभा में उपस्थित थे। उन्होंने विनम्रता के साथ कहा – ''कम–से कम कार्यकारिणी समिति की बैठक में प्रत्येक व्यक्ति को हिन्दी में बोलना चाहिए।''

जब यह बताया गया कि विश्वनाथबाबू हिन्दी नहीं जानते हैं, तो गांधीजी ने कहा – ''वह अपनी मातृभाषा उड़िया में बोलें, जिसका हिन्दी में नित्यानन्द कानूनगो द्वारा अनुवाद कर दिया जाएगा।'' सुभाषबाबू उड़िया बखूबी जानते थे। उन्होंने कहा – ''मैं हिन्दी में अनुवाद कर दूंगा। ''इस पर विश्वनाथबाबू ने उड़िया में भाषण दिया जिसका हिन्दी अनुवाद सुभाषबाबू ने किया।

– गांधी हिन्दी दर्शन से

हिन्दी के लिए हम क्या कर सकते हैं

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें।
- अपने गाँव एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न गतिविधियों को प्रोत्साहन दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को उचित सम्मान दें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

शुरुआत अपने घर से करें

- अपने परिवार में हिन्दी के ज्ञान को समृद्ध करें।
- बच्चों में हिन्दी के प्रति सम्मान और जिज्ञासा पैदा करें।
- बच्चों के विद्यालय की हिन्दी गतिविधियों में सहयोग दें।
- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं और संस्थाओं से जुड़ें।

सौजन्य:
बजाज
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
विश्वास की प्रेरणा